सितंबर (प्रथम) 2021 कीमत : 10.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज

पकड़ौवा विवाह

बंदूक की नोक पर शादी

- 5 कहानियां
- भाजपा के शिकार कल्याण सिंह
- हिंदू धर्म का पाखंड
- बेरोजगारों से ठगी
- राशि खन्ना की वापसी

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal

TETMOSOL®

नया

टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

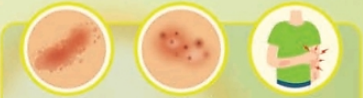

त्वचा के संक्रमण

घमोरियां

खुजली

से राहत दे

TETMOSOL®
DUSTING POWDER
Skin Infection Expert*
ANTI-FUNGAL
Fights Skin Infections
TRIPLE SKIN BENEFITS
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g
Piramal

TETMOSOL®
DUSTING POWDER
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
100 g

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। यदि संक्रमण तथा खुजली जारी है तो डॉक्टर की सलाह ले। इन्फेक्शन की संभावना बनी रहने तक डस्टिंग पाउडर लगाएं। परिणाम व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें।

CMAC - TP/20210301-03

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : **विश्वनाथ** (*1917-2002*)
सितंबर (प्रथम) 2021
अंक: 687
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बैंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मोंटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं--

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
• Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055, India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु., एक साल के लिए 535 रु., 2 साल के लिए 1069 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नईगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गहरी पैठ

लड़ाकू अफगानों ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि पहाड़ी इलाकों में रहने वाले ये लोग यदि कबिलाई ही हों, किसी के गुलाम बन कर नहीं रह सकते. अमेरिका को हराना इतना आसान नहीं है पर अमेरिका को लगने लगा था कि उस ने ओसामा बिन लादेन को मार कर अपना 9/11 का बदला ले लिया जब ओसामा बिन लादेन की स्कीम के मुताबिक 2 हवाईजहाज न्यूयौर्क के वर्ल्ड ट्रेड सैंटर से जा टकराए और 110 मंजिला ट्रेड सैंटर कुछ घंटों में 2,000 से ज्यादा लोगों की जान ले कर भरभरा कर गिर गया.

ओसामा बिन लादेन उस के बाद भागता फिरता रहा. अमेरिका ने इराक और अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया. जब लगा कि दुनिया को आतंकवाद से आधाअधूरा छुटकारा मिल चुका है तो उन्होंने पहले इराक और लीबिया को छेड़ा और अब जब अफगानिस्तान की गुफाओं में छिप कर रह रहे ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान के एबटाबाद में ढूंढ़ निकाला और एक रात बिना पाकिस्तान को भनक लगे मार डाला.

अब अफगानिस्तान में रहने का मतलब नहीं रह गया था और एकएक कर के सभी राष्ट्रपति किसी तरह इस जंजाल से निकलना चाह रहे थे. उन्हें यह जरूर लग रहा था कि उन के ट्रेन किए 3 लाख सैनिक और पुलिस वाले 60,000 के करीब तालिबानियों का आसानी से मुकाबला कर लेंगे और उन्हें काबुल में घुसने से रोक लेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ. अफगान सेना और पुलिस अमेरिकी टुकड़ों पर पली, पर उन का दिल तालिबानियों के साथ था. उस में विभीषणों और सुग्रीवों की कमी थी, भक्त नहीं थे जो 2 तरफ बात करते. उन्हें तालिबानी लाख कट्टरता के बावजूद अमेरिकियों से ज्यादा पसंद थे.

अफगानों ने साबित कर दिया है कि न ब्रिटिश, न रूसी, न पाकिस्तानी और अमेरिकी उन पर राज कर सकते हैं. इन अफगानों में बीसियों कबीले हैं जो एकदूसरे का सिर काटते रहते हैं पर जब मामला बाहरी कब्जे का आता है तो सब एकजुट हो जाते हैं. अफगानों ने भारत पर राज किया, अपने उत्तर में कई देशों पर राज किया है. पर उन्हें हराना हर देश के लिए मुश्किल रहा है.

इस का यह मतलब नहीं कि अफगान खुश रहे हैं. यह आजादी उन की आदत है तो धर्म की गुलामी भी इन के गले पर है. जब से इन्होंने इसलाम अपनाया है ये कट्टर होते गए. इसलाम ने पहाड़ी कबीलों के मन में एक गरूर भर दिया जो 1,000 साल से चला आ रहा है. अफगान सल्तनत के निशान दिल्ली में भी हैं और वे इसलाम के सहारे फैले क्योंकि इसलाम ने कम से कम ऊपरी तौर पर आदमी आदमी को अलग न समझा. हां, औरतों को तो वे हिंदुओं की तरह गुलाम ही मानते हैं.

भारत के लिए तालिबानी जीत एक खतरे की निशानी है. अफगान साम्राज्य कभी कश्मीर तक फैला था. कब वे कश्मीर में दखल देने लगें कह नहीं सकते. उन के तौरतरीके अलग हैं क्योंकि वे जान लेते हैं तो देते भी हैं. हमारी सेना के लिए यह खतरा है. उतना ही बड़ा खतरा ये तालिबानी पाकिस्तानी सेना के लिए हैं. चाहे तालिबानियों को जन्म तब की पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो ने दिया हो, आज यह खूंख्वार तेंदुआ पाकिस्तान पर भी झपट सकता है. इमरान खान ने अभी से काबुल की चिरौरी करनी शुरू कर दी है क्योंकि उन्हें मालूम है कि इन तालिबानियों के लिए इसलामाबाद कुछ ज्यादा दूर नहीं है और अब न चीन बचाने आएगा, न रूस, न अमेरिका.

★★★

देश में अब कोई सरकार बची है, ऐसा लगता नहीं है. सरकार है का ढोल तो मीलों तक सुनाई देता है पर रामराज कहां है, पता नहीं. सरकार अगर होती तो देश में इस तरह की हताशा नहीं होती. जिस के पास नौकरी है वह भी डरा हुआ है, जिस के पास नहीं है वह तो मरा हुआ ही है. कोविड का कहर कम हो गया है पर महंगाई की डायन और बढ़ती बेरोजगारी पर सरकारी प्रवचन तो हैं पर ठोस कुछ नहीं हो रहा है.

हां, फरटिदार गाड़ियां भगाने के लिए चौड़ी सड़कें बन रही हैं, आलीशान हवाईअड्डे बन रहे हैं, नया संसद भवन बन रहा है, नएनए नामों से कार्यक्रम थोपे जा रहे हैं पर कुछ हो रहा है, ऐसा दिखता नहीं है. सुप्रीम कोर्ट इस का उदाहरण है कि हर रोज उसे सरकारी वकीलों को फटकारना पड़ रहा है. आज मीडिया और विपक्ष की हिम्मत तो नहीं हो रही कि कुछ कह सके.

सरकार न किसानों के मामले को सुलझा पा रही है और न लोगों के फोन सुनने पर सफाई देने लायक बन पा रही है. सरकारी बयान तो बेमतलब के होते हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लंबेलंबे भाषणों से प्रवचन ही देते हैं जो वैसे ही लोकल पंडितों से लोग सुनसुन कर थक चुके हैं.

उत्तर प्रदेश के चुनावों की आहट होने लगी है तो भारतीय जनता पार्टी को पिछड़ों का खयाल आया है और रोजाना भाषणों या कानूनों में पिछड़ों के हिमायती बनने का ढोंग रचा जाता है पर एक भी कायदे का पिछड़ा नेता पार्टी में उभर नहीं रहा, न ही एक भी पिछड़े के पास अपने फैसले लेने लायक मंत्रालय है. दलितों व मुसलमानों को तो भाजपा गिनती ही नहीं है.

उस का खयाल है जब तक 10 फीसदी ऊंची जातियों के और 50 फीसदी पिछड़े ओबीसी उन के साथ हैं, उन्हें अछूत दलितों और विधर्मी मुसलमानों की सोचने की जरूरत नहीं है. इन की हालत हर रोज खराब हो रही है. 90 करोड़ लोगों को तो अनाज देना पड़ रहा है ताकि वे मर न जाएं. बाकी लोगों के वोटों से जीत का हिसाबकिताब ही सुहाता है.

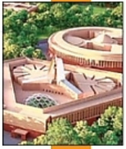

परेशानी यह है कि किसी भी देश की असली खुशहाली सब से नीचे के तबके से शुरू होती है. वह पढ़ेलिखे और हुनर अपनाए, उस के हाथ में 4 पैसे आएं. वह ऊंचे सपने देखे तो ही देश चमकता है. अमेरिका एक जमाने में बंजर था पर पानी के जहाजों में जो भगोड़े यूरोप से गए उन्होंने जीजान से मेहनत की और देश आज 100 साल से खुशहाल है. चीन पिछले 20-25 सालों में गरीबी खत्म कर चुका है. यूरोप लड़ाइयों में सबकुछ जलवा कर भी आज सब के लिए अजूबा है.

यह इसलिए कि यहां न तो पूजापाठ हुए, न प्रवचन. इन देशों में लोगों ने काम किया, हाथों में काला धागा बांध कर घंटियां नहीं बजाईं. कीर्तनों और आरतियों से मंदिर तो बन जाते हैं पर देश नहीं बनता, भूख नहीं खत्म होती, बीमारी का इलाज नहीं होता. हम क्या चुन रहे हैं, यह खुद से पूछिए. ●

पकड़ौवा विवाह

बंदूक की नोक पर शादी

मिनी सिंह

कहते हैं कि शादी ऐसा लड्डू है, जो खाए वह पछताए और जो न खाए वह भी पछताए. लेकिन वहां आप क्या करेंगे, जहां जबरन गुंडई से आप की मरजी के खिलाफ आप के मुंह में यह लड्डू ठूंसा जाने लगे? हम बात कर रहे हैं 'पकड़ौवा विवाह' की, जो बिहार के कुछ जिलों में आज भी हो रहे हैं.

22 साल के शिवम का सेना के टैक्निकल वर्ग में चयन हो गया था और वह 17 जनवरी को नौकरी जौइन करने वाला था. हमेशा की तरह एक सुबह जब वह अपने कुछ दोस्तों के साथ सैर पर निकला, तभी कार में सवार कुछ लोगों ने उसे अगवा कर लिया.

शिवम के दोस्तों ने बताया कि उन पांचों लोगों के हाथों में हथियार थे, इसलिए वे कुछ कर नहीं पाए.

शिवम को अगवा कर के वे बदमाश एक मंदिर में ले गए और जबरन उस की शादी एक लड़की से करा दी. शादी की तसवीरें सोशल मीडिया पर भी वायरल हुई थीं.

क्या है 'पकड़ौवा विवाह'

बिहार में इसे 'पकड़वा' या 'पकड़ौवा विवाह' या फिर 'फोर्स्ड मैरिज' भी कहते हैं. इस में लड़के का अपहरण कर के मारपीट और डराधमका कर उसे शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है.

इस शादी में कम पढ़ेलिखे, नाबालिग से ले कर नौकरी करने वाले नौजवानों का अपहरण कर जबरन शादी करा दी जाती है. कुछ साल पहले इसी मुद्दे पर एक फिल्म 'जबरिया जोड़ी' भी बनी थी.

बिहार में बंदूक की नोक पर शादी कराना कोई बड़ी बात नहीं है. यह तो बहुत ही पुरानी परंपरा है. साल 1980 के दशक में उत्तरी बिहार में खासतौर पर बेगूसराय में 'पकड़ौवा विवाह' के मामले खूब सामने आए थे और आज भी इस तरह की शादियां हो रही हैं. बता दें कि ऐसी शादी कराने वाला एक गैंग होता है.

कैसे काम करता है गैंग

1980 के दशक में बिहार में कई ऐसे गैंग बनाए गए थे, जिन की शादी के सीजन में काफी डिमांड रहती थी.

ये गिरोह लड़की के लिए सही लड़के की तलाश करते थे और मौका देख कर उसे अगवा कर बंदूक की नोक पर शादी कराते थे. शादी के बाद लड़के के घर वालों पर लड़की को बहू के तौर पर स्वीकारने के लिए दबाव बनाते थे.

बिहार के नालंदा जिले के एक बुजुर्ग रामकिशोर सिंह की शादी भी आज से तकरीबन 40 साल पहले अपहरण कर के ही हुई थी. रामकिशोर का कहना है कि ऐसी शादी में न दहेज देने की चिंता होती है और न ही ज्यादा खर्चे की.

हालांकि यह सब करना अपराध की श्रेणी में आता है, लेकिन इस मामले में पुलिस की भूमिका बहुत ही सीमित है. राज्य पुलिस मुख्यालय इसे आपराधिक से ज्यादा सामाजिक समस्या के रूप में देखता है.

राज्य के अपर पुलिस महानिदेशक गुप्तेशर पांडेय कहते हैं कि जबरन होने वाली शादियों को भी बाद में सामान्य शादियों की तरह ही सामाजिक मान्यता मिलती रही है. इस में पुलिस की भूमिका काफी सीमित है.

पुलिस महकमे के अफसरों का भी मानना है कि ऐसे में लड़के के परिवार वाले तो अपहरण का मामला थाने में दर्ज करवाते हैं, लेकिन जब पता चलता है कि शादी के लिए अगवा किया गया है तो कार्यवाही में ढिलाई दे दी जाती है, क्योंकि किसी लड़की की शादी तो नेक काम है. कई मामले की जांच होतेहोते दोनों पक्ष समझौता कर चुके होते हैं. ऐसे में पुलिस के पास भी करने के लिए ज्यादा कुछ नहीं होता है.

ऐसी शादी में ऐसे लड़के पहले से ही निशाने पर होते हैं, जो अपनी ही जाति के होते हैं. यह शादी किसी पंडित द्वारा तय नहीं कराई जाती है, बल्कि कभीकभी लड़के का कोई अपना सगा ही होता है, जो धोखे से उसे मंडप तक ले जाता है. 'पकड़ौवा विवाह' में आननफानन ही मंडप तैयार कर लड़की को दुलहन की तरह तैयार कर उस की मांग किडनैप किए लड़के से भरवा दी जाती है. ऐसी शादी के लिए न तो लड़का मानसिक रूप से तैयार होता है और न ही लड़की.

एक औरत बताती है कि जब वह 15 साल की थी, तब जबरन उस की शादी करवा दी गई. मरजी पूछना तो दूर की बात है, उस 15 साल की बच्ची को यह तक पता नहीं था कि आज उस की शादी होने वाली है. मांबाप लड़की को ले जा कर मंडप में बैठा देते हैं और कुछ ही मिनटों में एक अनजान शख्स, जिसे उस ने देखा तक नहीं है, उस का पति बन जाता है.

उस औरत ने आगे बताया कि उसे गुस्सा आता था कि मेरे साथ यह क्या हो गया. पति ने 3 साल तक उसे नहीं स्वीकारा. लड़के का कहना था वह फांसी लगा कर मर जाएगा, पर इस शादी को नहीं स्वीकारेगा.

लड़के का यह भी कहना था कि जिस लड़की को वह जानता तक नहीं, उसे उस से रिश्ता नहीं रखना. उसे उस लड़की से कोई मतलब नहीं. उसे पढ़लिख कर अपनी जिंदगी बनानी है. लेकिन फिर बाद में सुलहसफाई के लिए पंचायत बैठी, तब जा कर लड़की को ससुराल विदा करा कर ले जाया गया.

"तब मैं 7वीं क्लास में पढ़ती थी, जब मेरा 'पकड़ौवा विवाह' करा दिया गया था," यह कहना है 48 साल की मालती का, जो अब 3 बच्चों की मां है और उस के सभी बच्चों की भी शादी हो चुकी है.

उस समय को याद कर के मालती आगे बताती है कि रोजाना की तरह उस दिन भी वह रसोई में खाना पकाने में अपनी मां की मदद कर रही थी, तभी मां ने उसे उठाते हुए कहा कि ये कपड़े लो और जा कर जल्दी से तैयार हो जाओ. आज तुम्हारी शादी है.

कुछ ही मिनटों में एक लड़के से उस की शादी करा दी गई. उसे नहीं पता था कि जिस लड़के को उस के घर वालों ने पूरे दिन घर में बंद रखा था, उसी से उस की शादी करा दी जाएगी.

लेकिन फिर वह जो बताती है, किसी यातना से कम नहीं है. मालती कहती है कि गुस्से से खार खाए पति और उस के घर वाले सालों तक उसे विदा करा कर नहीं ले गए.

लेकिन फिर सामाजिक दबाव में आ कर उन्हें उसे विदा करा कर ले जाना पड़ा. लेकिन आज तक मालती को अपने

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

New Pack
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT & HEALTHY
STOMAFIT
CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

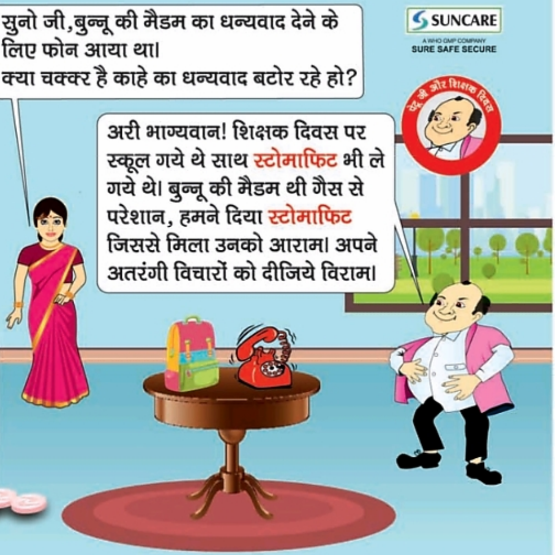
सुनो जी, बुन्नू की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था। क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?
अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ स्टोमाफिट भी ले गये थे। बुन्नू की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया स्टोमाफिट जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।
टेढू जी और शिक्षक दिवस

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

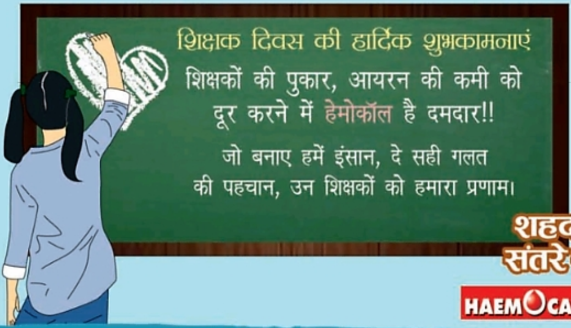

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!

जो बनाए हमें इंसान, दे सही गलत की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध (450ml)

SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:

SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.

Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com

Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY STOMAFIT

पति से वह प्यार और इज्जत नहीं मिली, जो एक पत्नी को अपने पति से मिलनी चाहिए.

मालती कहती है कि वह निर्दोष थी, लेकिन अपने मातापिता की गलती की सजा वह आज तक भुगत रही है.

पति और ससुराल वाले ताना मारते थे कि बिना दहेज के मुसीबत पल्ले बांध दी गई. लेकिन हैरत तो इस बात की होती है कि जिस मालती के पति ने कभी उसे स्वीकार नहीं किया, तो क्या दहेज मिल जाने से उसे स्वीकार कर लेता?

सच तो यही है कि 'पकड़ौवा विवाह' की सब से बड़ी वजह दहेज प्रथा ही है. 'पकड़ौवा विवाह' में दूल्हे की हालत का अंदाजा आप 27 साल के प्रमोद की बातचीत से लगा सकते हैं.

प्रमोद का कहना है कि उस के एक दोस्त ने ही धोखे से उस का अपहरण करवाया और फिर बंदूक की नोक पर मंडप तक ले गया. न चाहते हुए भी उसे उस लड़की से शादी करनी पड़ी, जिसे वह जानता तक नहीं था.

इस शादी को अमान्य घोषित करवाने के लिए उस ने लड़ाई भी लड़ी. लेकिन आखिरकार थोपी गई उस शादी को उसे मानना ही पड़ा. आज भी जब अपनी पत्नी को देखता है, तो वह डरावना सच उसे याद आने लगता है.

हमारे देश में विवाह जैसी संस्था आज भी मजबूत है. अगर एक बार लड़कालड़की की शादी हो जाए तो बड़ी मुश्किल से टूटती है. यही वजह है कि लड़की वाले ऐसी ओछी हरकतें करने से बाज नहीं आते हैं. सोचते हैं कि लड़की ससुराल में टिक गई तो ठीक, वरना देखा जाएगा.

क्यों धकेलते हैं दलदल में

पटना यूनिवर्सिटी में समाजशास्त्र की प्रोफैसर रही भारती एस. कुमार कहती हैं कि यह सामंती सोच समाज की देन है. बिहार में सामाजिक दबाव इतना ज्यादा है कि लड़की के परिवार वाले इसी कोशिश में रहते हैं कि कैसे जल्द से जल्द अपनी जाति में बेटी की शादी करा कर अपने सिर का बोझ उतार लें. लेकिन इस बेमेल शादी का बुरा असर पतिपत्नी पर जिंदगीभर देखने को मिलता है.

अपराध हैं ऐसी शादियां

कहींकहीं तो लड़की जिंदगीभर सताए जाने की शिकार होती है. वे कहती हैं कि ऐसी शादी वही मांबाप करवाते हैं, जिन के पास बेटी को देने के लिए दहेज नहीं होता.

लेकिन हैरानी की बात यह है कि जब लड़का लड़की को अपनाने से इनकार कर देता है तो फिर उसी शादी को वह दहेज के साथ स्वीकार भी कर लेता है मानो दहेज और शादी का एक चक्रव्यूह हो, जिस से निकलने का कोई सिरा नहीं है.

'पकड़ौवा विवाह' का शिकार हुए नवादा जिले के संतोष कुमार ने फिल्म कलाकार आमिर खान के टैलीविजन शो 'सत्यमेव जयते' और अभिताभ बच्चन के शो 'कौन बनेगा करोड़पति' में बताया था कि उन की भी जबरन शादी कराई गई थी. लेकिन आज वे अपनी पत्नी के साथ खुश हैं.

वहीं बेगूसराय के रहने वाले और इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर लौटे अनीश कहते हैं कि 'पकड़ौवा विवाह' को सामाजिक मंजूरी नहीं मिलनी चाहिए. किसी लड़के का अपहरण कर उस की शादी किसी से भी करा दी जाए, तो क्या उस के खिलाफ नहीं बोलना चाहिए?

अनीश का कहना है कि इस का विरोध न केवल लड़के को, बल्कि लड़की को भी करना चाहिए, क्योंकि नाइंसाफी दोनों के साथ हुई होती है.

मकसद क्या है

हमारे समाज में दहेज लेना और देना दोनों ही कानूनी जुर्म हैं, लेकिन फिर भी दहेज का लेनदेन हो रहा है. यह कुप्रथा आज भी चली आ रही है. लोग आपसी सहमति से दहेज का लेनदेन कर रहे हैं.

समाज की अलगअलग जातियों के हिसाब से लड़के की काबिलीयत और पद के हिसाब से हर किसी का एक अघोषित 'मार्केट रेट' होता है. जो लड़की वाले इस रेट के हिसाब से शादी के लिए लड़के वालों की डिमांड पूरी करने की हैसियत रखते हैं, उन की लड़की की शादी तो आराम से हो जाती है, लेकिन जिन की दहेज देने की हैसियत नहीं होती, वे ऐसे ही रास्ते अपनाते हैं.

ऐसे होता है 'पकड़ौवा विवाह'

लड़की वाले लड़के को अगवा करने से पहले उसे टारगेट कर के रखते हैं. उस की बहुत सी बातों पर गौर किया जाता है, जैसे कि लड़के वाले लड़की वालों की तुलना में ज्यादा पैसे वाले हों. लड़का काबिल तो हो ही, साथ ही उस में अपनी भावी पत्नी का भरणपोषण करने की ताकत भी हो.

अगर लड़का अपनी जाति से हो तो और भी अच्छा. वैसे, ज्यादातर कोशिश यही होती है कि लड़का अपनी ही जाति का होना चाहिए.

शादी के बाद लड़की का उस घर में गुजारा हो सके, इस बात का भी ध्यान रखा जाता है.

लड़के के साथ क्या होता है

पहले तो लड़के के बारे में अच्छे से जानकारी हासिल कर ली जाती है कि लड़का कब और कहां आताजाता है. उस के बाद आसानी से उसे अगवा कर लिया जाता है. कई बार इस काम के लिए लड़की वाले प्रोफैशनल गुंडों को भी इस्तेमाल करते हैं.

वे बताते हैं कि अगर लड़का आने से आनाकानी करे, तो हलकी धुनाई कर दी जाए, पर ध्यान रहे कि लड़के का अंग भंग नहीं होना चाहिए. फिर लड़के को पकड़ कर एक कमरे में बंद कर दिया जाता है और आननफानन में मंडप सजा कर शादी करवा दी जाती है.

शादी के बाद दूल्हे को वे लोग कुछ दिन अपने घर पर ही रखते हैं, ताकि लड़का और लड़की आपस में मिल सकें. फिर लड़के को उस के घर भेजते समय धमकी देते हैं कि जल्द ही वह लड़की को विदा करा कर ले जाए वरना ठीक नहीं होगा.

लेकिन ऐसी शादियां अब कहींकहीं पर अमान्य होने लगी है. पेशे से

प्यार बढ़ेगा, दूध बहेगा!
कपिला ® पशु आहार एवं कश्यप ™
सबसे ज्यादा 75% पोषण
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज़्यादा दूध
AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY
सुप्रीम पैलेट SUPREME PELLET
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० ● 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

इंजीनियर विनोद की शादी ऐसे ही जबरन करवा दी गई थी, जिस का वीडियो भी वायरल हुआ था.

लेकिन विनोद ने यह 'पकड़ौवा विवाह' मानने से साफ इनकार कर दिया था. उस का कहना था कि अगर कोई मेरी शादी भैंस से करवा दे तो क्या मैं उसे अपनी पत्नी मान लूंगा?

विनोद आपबीती बताते हुए कहते हैं कि लड़की वालों ने उन्हें 2 दिन तक कमरे में बंद रखा और जबरन लड़की को अपनाने के लिए मजबूर करते रहे.

विनोद के घर वाले पुलिस के पास मदद के लिए गिड़गिड़ाए भी, लेकिन पुलिस वालों ने उन की कोई मदद नहीं की, बल्कि कहा कि आप के बेटे का अपहरण नहीं हुआ है, शादी ही तो हुई है.

मतलब, पुलिस की नजर में यह शादी सही थी. पुलिस ने यह भी कहा कि ये खतरनाक लोग हैं, इसलिए तुम अब लड़की को ले कर अपने घर चले जाओ, क्योंकि शादी तो हो ही गई है.

विनोद का कहना है कि पुलिस पूरी तरह से लड़की वालों से मिली होती है, इसलिए वह कोई एफआईआर दर्ज नहीं करती. लड़की वालों का मन इसलिए बढ़ा हुआ है, क्योंकि पुलिस इन के साथ है. यह तो कोर्ट का शुक्र है कि मुझे कुछ राहत मिली, नहीं तो मेरा जीना मुश्किल हो गया था.

पटना के एएन सिन्हा संस्थान के निदेशक रह चुके डीएम दिवाकर का कहना है कि 'पकड़ौवा विवाह' का इतिहास 100 साल से भी ज्यादा पुराना है. लेकिन अभी इस में उछाल आने की 4 खास वजहें हैं. पहली तो पूंजी के दबाव में दहेज का विकराल रूप, दूसरी लड़कियों का पढ़ालिखा न होना, तीसरी गैरकृषि व्यवसाय में दूल्हे की चाहत लगातार बढ़ रही है और चौथी यह है कि सामाजिक तानेबाने में जातीय जकड़ अभी भी कायम है.

साल 2019 में कोर्ट ने एक अहम फैसला सुनाते हुए 'पकड़ौवा विवाह' को गैरकानूनी करार दिया. मतलब यह कि अब ऐसी शादी को कानूनी मंजूरी नहीं मिलेगी. लेकिन विनोद के 'पकड़ौवा विवाह' के मामले में कोर्ट फैसला इसलिए ले पाई, क्योंकि अपील करने वाले के पास मजबूत सुबूत था.

'पकड़ौवा विवाह' के मामले में आप की शादी जबरन करवाई गई, यह साबित करने की जिम्मेदारी लड़के के ऊपर होती है.

पटना की परिवार कोर्ट में सालों से प्रैक्टिस कर रही एडवोकेट विभा कुमारी बताती हैं कि 'पकड़ौवा विवाह' को अमान्य घोषित करवाने के मामले बहुत ही कम आते हैं.

'पकड़ौवा विवाह' के आंकड़े

साल 2018 में 'पकड़ौवा विवाह' के 4,301 मामले दर्ज हुए थे, जबकि मई, 2019 तक 2,005 मामले दर्ज हो चुके थे. इस से पहले के सालों में भी ऐसी शादी के मामले लगातार बढ़ रहे हैं.

बिहार पुलिस हैडक्वार्टर के आंकड़ों के मुताबिक, साल 2014 में 2,526 मामले, 2015 में 3,000 मामले और साल 2016 में 3,070 और नवंबर, 2017 में 3,405 'पकड़ौवा विवाह' के लिए अपहरण हुए थे.

राष्ट्रीय क्राइम रिकौर्ड ब्यूरो, 2015 की रिपोर्ट भी कहती है कि बिहार में 18 से 30 साल के नौजवानों का सब से ज्यादा अपहरण हुआ है. देश में इस उम्र के नौजवानों का अपहरण का तकरीबन 16 फीसदी है.

पुलिस आंकड़ों के मुताबिक, शादी के लिए अपहरण के 2,370 मामले जनवरी से सितंबर तक दर्ज किए गए थे और उन में से 1,804 मामले केवल लौकडाउन के महीनों में दर्ज किए गए.

और भी लड़ रहे हैं लड़ाई

शेखपुरा जिले के रवींद्र कुमार झा ने बताया कि उन के 15 साल के बेटे की शादी साल 2013 में जबरन 11 साल की बच्ची से करा दी गई थी. उन्होंने इस शादी को मानने से इनकार कर दिया तो लड़की वालों ने उन के परिवार पर दहेज प्रताड़ना (498ए) का केस कर दिया. बाद में एंटीसिपेटरी बेल के बाद वह शादी अमान्य घोषित करवाई गई.

बोकारो में नौकरी करने वाले विनोद का पूरा परिवार पटना में रहता है. 4 भाईबहनों में से सिर्फ 2 की शादी हो पाई है. वे कहते हैं कि अपनी छोटी बहन की शादी के लिए जहां भी जाते हैं, सब यही कहते हैं कि ये लोग तो मुकदमे में फंसे हुए हैं तो फिर रिश्ता कैसे हो सकता है.

'पकड़ौवा विवाह' में बेटी की जबरदस्ती शादी कर के मांबाप अपने सिर से बोझ तो उतार लेते हैं और दहेज व शादी के खर्चे से भी बच जाते हैं, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि इस बेमेल शादी का बुरा असर पतिपत्नी पर जिंदगीभर पड़ेगा, उस की भरपाई कौन करेगा? लड़के के दिल में हमेशा एक टीस उठेगी कि उस के साथ धोखा हुआ है. ●

Dhanwantri
Divine-9
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR
क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★ जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★ शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★ एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★ जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™ ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें - 09258040152, 05921250052

निर्माताः धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार-0612-2673987, झारखण्ड-9771390698, उ.प्र.-लखनऊ-9415768958, इलाहाबाद-9236011955, कानपुर-9839940626, आगरा-9412166680, अलीगढ-9837843430, गोरखपुर-9336400742, बरेली-इमदाद हुसैन-9411070751, शाहजहांपुर-9450442978, मेरठ-9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता-09432485534, 07278040890, दिल्ली-9810386276, 9899161855, राजस्थान-9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़-9301315674, मध्य प्रदेश-उज्जैन-09826284858, इन्दौर-0731-2463274, 9098144825, भोपाल-09893257976, जबलपुर-09424686874, पंजाब-जालंधर-01679-231670, 501670, 9417331070, हरियाणा-फतेहाबाद-09812446363, रोहतक-09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद-01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

रूमा देवी : झोंपड़ी से यूरोप तक

वीरेंद्र बहादुर सिंह

फैशन शो यानी तरहतरह के कपड़ों को नए अंदाज में पेश करने का जरीया. इसी तरह का एक फैशन शो चल रहा था, जिस में अनोखी कढ़ाई से सजे कपड़े पहन कर फैशनेबल मौडल रैंप पर आ कर सधी चाल में चल रही थीं.

आखिर में इन कपड़ों की डिजाइन तैयार करने वाली राजस्थानी अंदाज में सजीधजी मुसकराते हुए एक औरत स्टेज पर आई. यह वही औरत थी रूमा देवी, जिस ने अपनी क्षेत्रीय कला को मौडर्न रूप दे कर दुनियाभर में नाम दिलाया है.

रूमा देवी का जन्म नवंबर,1988 में राजस्थान के जिले बाड़मेर के एक छोटे से गांव रातवसर में एक सामान्य परिवार में हुआ था. उन के पिता का नाम खेताराम तो मां का नाम इमरती देवी था.

जब रूमा देवी 5 साल की थीं, तभी उन की मां की मौत हो गई थी. मां की मौत के बाद पिता ने दूसरी शादी कर ली.

सौतेली मां के साथ रहने के बजाय रूमा देवी अपने चाचा के साथ रहने लगीं. 7 बहनों और एक भाई में रूमा देवी सब से बड़ी थीं.

राजस्थान में तब पीने के पानी की बड़ी किल्लत थी. रूमा देवी ने वे दिन भी देखे हैं, जब पीने के लिए पानी 10 किलोमीटर दूर बैलगाड़ी से लाया जाता था.

8वीं जमात पास करने के बाद रूमा देवी की पढ़ाई छुड़वा दी गई. स्कूल छूटने के बाद वे अपनी चाची के साथ घरगृहस्थी के कामकाज सीखते हुए घर के कामों में मदद करने लगीं.

17 साल की ही छोटी उम्र में रूमा देवी की शादी बाड़मेर के ही गांव बेरी के रहने वाले टिकूराम से कर के उन्हें ससुराल भेज दिया गया.

टिकूराम नशामुक्ति संस्थान, जोधपुर के साथ मिल कर काम करते हैं. उसी छोटी उम्र में रूमा देवी ने एक बेटे को जन्म दिया, पर उन का मासूम बेटा उचित इलाज न मिलने की वजह से महज 48 घंटे बाद ही काल के गाल समा गया.

इस आघात से निकलना रूमा देवी के लिए आसान नहीं था, पर उन के घर की माली हालत काफी खराब थी, इसलिए उन्होंने घर से कुछ ऐसा करने के बारे में विचार किया, जिस से वे भी चार पैसे कमा कर घर वालों की मदद कर सकें.

रूमा देवी की दादी ने उन्हें कसीदाकारी की कला सिखाई थी. अपने बेटे की मौत के शोक में दिन काट रही रूमा देवी के मन में अपनी इस कला के जरीए आजीविका चलाने का विचार आया. उन्होंने परिवार वालों को बताया. पहले तो उन्होंने विरोध किया, पर किसी तरह राजी कर के रूमा देवी ने घर में ही हाथ द्वारा सिलाई कर के एक हैंडबैग बनाना शुरू किया.

रूमा देवी द्वारा बनाए गए पहले हैंडबैग को बेच कर कुल 70 रुपए की कमाई हुई. इस 70 रुपए से उन्होंने आगे के सफर के लिए कुशन, धागा, कपड़ा और प्लास्टिक का रैपर जैसा सामान खरीदा.

उन्हीं की तरह की दूसरी औरतें भी कुछ कमाई कर सकें, यह सोच कर रूमा देवी ने इस काम के लिए आसपड़ोस की दूसरी औरतों को साथ लेने का निश्चय किया.

रूमा देवी द्वारा तैयार किए गए स्थानीय 'महिला बाल विकास' की 10 औरतों ने 100-100 रुपए जमा कर के अपने काम के लिए जरूरी सामान मंगाया. एक सैकंडहैंड सिलाई मशीन खरीदी.

दसों औरतों ने अलगअलग काम बांट लिए. उन्होंने खास शैली के बाड़मेरी कढ़ाई से सजे हैंडबैग, कुशन कवर, साड़ी और परदे बना कर उन्हें बेचना शुरू किया.

बाकी सहयोगी औरतों को काम मिलता रहे, इस के लिए रूमा देवी ने साल 2008 में बनी और विक्रम सिंह द्वारा चलाई जा रही संस्था 'ग्रामीण विकास एवं चेतना संस्थान' से संपर्क किया. यह संस्था राजस्थान हस्तशिल्प उत्पादों द्वारा औरतों को आत्मनिर्भर बनाती है.

साल 2008 में रूमा देवी इस संस्था से जुड़ीं. इस संस्था से रूमा देवी को 3 दिनों का काम मिला. रूमा देवी और उन के साथ काम करने वाली औरतों में काम करने का इतना जोश था कि 3 दिनों का काम उन्होंने एक ही दिन में पूरा कर डाला. इस तरह उन्हें ज्यादा से ज्यादा काम मिलता गया और वे उसे समय से पहले कर के देती रहीं.

रूमा देवी ने संस्था से जुड़ कर उस के लिए हस्तशिल्प के नए डिजाइन तैयार किए. तैयार सामान की बाजार में मांग बढ़ाई, इसीलिए साल 2010 में संस्थान की कमान रूमा देवी को सौंप दी गई. उन्हें संस्था का अध्यक्ष बना दिया गया. इस संस्था का हैड औफिस बाड़मेर में ही है.

रूमा देवी के घर चार पैसे आने लगे, तो वे बाड़मेर के दूसरे गांवों में रहने वाली औरतों को अपने पैरों पर खड़ा करने का निश्चय किया. इस के लिए रूमा देवी ने खुद गाड़ी में बैठ कर दूरदूर तक गांवों में जा कर वहां रहने वाली औरतों से मिलना शुरू किया.

राजस्थान के गांवदेहात के इलाके में लोग दूरदूर अलगअलग छोटेछोटे घर बना कर रहते हैं, इसलिए रूमा देवी पूरे दिन घूमतीं तो 4-6 परिवारों से ही मुलाकात होती.

रूमा देवी खुद औरत थीं. उन का घर से निकलना किसी को पसंद नहीं था. उन के घर से बाहर जाने पर लोग तरहतरह की बातें करते, ताने मारते, फिर भी हालात से हारे बगैर उन्होंने औरतों और उन के घर वालों को समझाते हुए 75 गांवों की तकरीबन 22,000 औरतों को अपने साथ काम करने के लिए बढ़ावा दिया.

आज रूमा देवी की कोशिशों से ये औरतें अपने परिवार की माली तौर पर मदद कर रही हैं. इन औरतों द्वारा अलगअलग तरह के कपड़ों पर खास तरह के पैचवर्क और कढ़ाई कर के दुपट्टा, कुरती और साड़ी, परदों को सजाया जाता है. उन के बिकने पर जो फायदा होता है, सीधे वह इन औरतों को मिलता है.

आज इस संस्था से जुड़ी औरतों के कामकाज का सालाना टर्नओवर करोड़ों रुपए का है. रूमा देवी द्वारा की गई कोशिशों को साल 2018 में औरतों के लिए सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'नारी शक्ति पुरस्कार' से नवाजा गया.

15 व 16 फरवरी, 2020 को अमेरिका में आयोजित 2 दिवसीय हार्वर्ड इंडिया कौंफ्रेंस में भी रूमा देवी को बुलाया गया था. तब वहां उन्हें हस्तशिल्प उत्पाद प्रदर्शित करने के साथसाथ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के बच्चों को पढ़ाने का भी मौका मिला.

इस के अलावा रूमा देवी को 'कौन बनेगा करोड़पति' में अमिताभ बच्चन के सामने हौट सीट पर बैठने का मौका मिल चुका है.

साल 2016-17 में जरमनी में दुनिया का सब से बड़ा ट्रेड फेयर लगा था. उस में शामिल होने के लिए तकरीबन 15 लाख रुपए फीस लगती थी. पर रूमा देवी की टीम को उस ट्रेड फेयर में मुफ्त में बुलाया गया था.

साल 2019 में जब रूमा देवी को 'फैशन डिजाइनर औफ द ईयर' घोषित किया गया, तो उन्होंने कहा कि हर महिला में एक खास काबिलीयत होती है. अपनी खूबी की पहचान कर के उसे बाहर लाएं.

रूमा देवी पर हाल में एक किताब भी लिखी गई है, जिस का नाम है 'हौसले का हुनर'. ●

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर

देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...

WARRANTY
60
MONTHS
यूनाईटेड®
प्रेशर कुकर
यूनिराइज़™
orignal 5 लिटर
सर्वोच्च
UNITED
PRESSURE COOKER
United®
IS : 2347
ISI
CM/L-3294967

United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

कल्याण सिंह हालात के हिसाब से बदलते रहे

शैलेंद्र सिंह

'मेरा उद्देश्य अब पिछड़ों को उन का हक दिलाना है. राष्ट्रीय जनक्रांति पार्टी इस काम को पूरा करेगी...' साल 2002 में अपनी अलग पार्टी का गठन करते समय कल्याण सिंह ने ऐसा कहा था.

'भाजपा में वापस जाना मेरी भूल थी. राम मंदिर पर अपनी भूमिका को ले कर भी मुझे खेद है. इस बार मैं ने हमेशाहमेशा के लिए भाजपा से संबंध खत्म कर लिए हैं,' 21 जनवरी, 2009 को कल्याण सिंह ने भाजपा से अलग होने के बाद कहा था.

कल्याण सिंह अपनी बात पर कायम होने वाले नेता नहीं बन सके. वे जबजब भाजपा से अलग हुए, तबतब पार्टी को बुरी तरह से कोसा. इस के बाद वापस भाजपा में गए.

वैसे तो कल्याण सिंह साल 1967 में पहली बार विधायक चुने गए थे, लेकिन भाजपा में उन का उपयोग उस समय किया गया, जब तब के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पिछड़ी जातियों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए मंडल कमीशन की सिफारिशों को पूरे देश में लागू किया था.

हर दल में पिछड़ी जाति के नेताओं को अहमियत दी जाने लगी थी और उस दौर में भाजपा ने भी कल्याण सिंह और उमा भारती जैसे पिछड़े तबके के नेताओं को आगे कर के सत्ता हासिल की थी.

जनता पार्टी में जनसंघ का विलय होने के बाद जब जनता पार्टी टूटी, तब जनसंघ से आए नेताओं ने भारतीय जनता पार्टी नाम से नया दल बनाया था. इस के पीछे संघ का पूरा हाथ था.

भाजपा के संस्थापकों में अगड़ी जातियों के नेता प्रमुख थे. इन में अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी व विजयाराजे सिंधिया जैसे नेता प्रमुख थे.

भाजपा के बनने के बाद संघ ने तय किया कि राम मंदिर आंदोलन को तेज किया जाएगा. इसी दौर में मंडल कमीशन को ले कर पिछड़ों की राजनीति भी शुरू हो रही थी.

भाजपा को उत्तर प्रदेश में पिछड़ी जाति के किसी ऐसे नेता की तलाश थी, जो मुलायम सिंह यादव का मुकाबला कर सके, वह जमीन से जुड़ा हो और उस में हिंदुत्व की भी धार हो.

कल्याण सिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश की उसी बैल्ट से आते थे, जिस से मुलायम सिंह यादव आते थे. अलीगढ़ के रहने वाले कल्याण सिंह साल 1967 में पहली बार विधायक बने थे. इसी साल मुलायम सिंह यादव भी चुनाव जीते थे.

मुलायम सिंह यादव भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इटावा से आते थे. वे साल 1977 में जनता पार्टी की सरकार में स्वास्थ्य मंत्री थे. ऐसे में भाजपा ने कल्याण सिंह को उत्तर प्रदेश की बागडोर सौंपने का फैसला लिया.

कल्याण सिंह की खूबी थी कि वे पिछड़ी लोधी जाति से आते थे. वे हिंदुत्व की राजनीति कर सकते थे. वे अक्खड़ और रूखे स्वभाव के नेता थे. उन की छवि साफ थी. साल 1984 में कल्याण सिंह को भाजपा ने प्रदेश अध्यक्ष बना कर उन का इस्तेमाल शुरू किया था.

आमनेसामने 2 ओबीसी नेता

साल 1986 में राम मंदिर आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम किया गया, तो कल्याण सिंह सब से उपयोगी नेता साबित हुए. भाजपा ने कल्याण सिंह के कंधे पर बंदूक रख कर चलाना शुरू किया. उत्तर प्रदेश में पिछड़े वर्ग के लोग एकजुट न रह सके, जिस से मंडल कमीशन का फायदा पिछड़ी जातियों को मिल सके.

इस राजनीति ने कल्याण सिंह और मुलायम सिंह यादव को आमनेसामने खड़ा कर दिया. मुलायम सिंह यादव संघ की हिंदुत्व वाली राजनीति के खिलाफ थे. कल्याण सिंह ने राम मंदिर आंदोलन की कमान खुद संभाल रखी थी. उन दोनों के बीच राजनीतिक मुठभेड़ शुरू हो गई.

भाजपा में ऊंची जातियों के नेता दूर से इस लड़ाई को देख रहे थे. साल 1989 में जब मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब कल्याण सिंह भाजपा विधानमंडल दल के नेता थे. इस दौरान राम मंदिर आंदोलन शिखर पर था.

साल 1990 में राम मंदिर बनाने के लिए कारसेवा की घोषणा हुई. उस समय मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे. उन्होंने कहा था कि अयोध्या में कोई भी कारसेवक घुसने नहीं पाएगा. वहां परिंदा भी पर नहीं मार पाएगा. दूसरी तरफ कल्याण सिंह इस बात पर अडिग थे कि कारसेवक अयोध्या पहुंचेंगे. 30 अक्तूबर और 6 नवंबर को हिंसक झड़पें हुईं.

कारसेवकों को रोकने के लिए मुलायम सिंह यादव को गोलियां चलवानी पड़ीं. इस के बाद उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की लहर उठी. कल्याण सिंह इस के प्रतीक बने. मंडल कमीशन और पिछड़ों की राजनीति का नुकसान हुआ. मुलायम सिंह की सरकार गिर गई.

साल 1991 में उत्तर प्रदेश में दोबारा चुनाव हुए और तब पहली बार कल्याण सिंह की अगुआई में भाजपा की सरकार बनी. 221 सीटों वाली भाजपा ने कल्याण सिंह को अपना मुख्यमंत्री बनाया. कल्याण सिंह ने अपनी सरकार का कामकाज रामलला के दर्शन करने के बाद शुरू किया.

हिंदुत्व की लहर पर सवार कल्याण सिंह भले ही मुख्यमंत्री बने पर पिछड़ी जातियों के सामाजिक न्याय के साथ धोखा हो गया. कल्याण सिंह केवल पिछड़ी जातियों के न्याय और मंडल कमीशन लागू होने की राह में रोड़ा ही नहीं बने, बल्कि मुख्यमंत्री की कुरसी पर बैठ कर कानून और व्यवस्था के प्रति न्याय नहीं कर सके. अदालत में शपथपत्र देने के बाद भी वे अयोध्या के विवादित ढांचे की हिफाजत नहीं कर सके.

जब गिर गया विवादित ढांचा

कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री बनने के बाद राम मंदिर की राजनीति करने वाली विश्व हिंदू परिषद ने दबाव बनाना शुरू किया कि राम मंदिर मसला जल्दी हल किया जाए.

कल्याण सिंह राम मंदिर बनाने का रास्ता मजबूत करना चाहते थे, पर उन के पास कोई हल नहीं था. मसला कोर्ट में था. बिना कोर्ट के फैसले के कुछ हो नहीं सकता था. वे इस मामले में थोड़ा वक्त चाहते थे.

राम मंदिर आंदोलन से जुड़े ऊंची जातियों के नेता इस के लिए वक्त देने को तैयार नहीं थे. ऐसे में 6 दिसंबर, 1992 को कारसेवा की घोषणा कर दी गई. कल्याण सिंह ने केंद्र की नरसिम्हा राव सरकार और सुप्रीम कोर्ट दोनों को वचन दिया कि कारसेवा के दौरान अयोध्या में कोई गड़बड़ नहीं होने दी जाएगी.

6 दिसंबर के पहले से ही देशभर में माहौल गरम था. कारसेवा करने वालों के हौसले बुलंद थे, क्योंकि इस बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह थे, जो रामभक्त थे. उन से यह उम्मीद नहीं की जा रही थी कि वे कारसेवकों पर गोली चलवाएंगे. कारसेवक, जो काम साल 1990 में नहीं कर पाए थे, वह 2 साल बाद साल 1992 में करना चाहते थे.

कल्याण सिंह ने अयोध्या की सुरक्षा के ऐसे इंतजाम किए थे, जिस में केंद्र सरकार की फोर्स पीछे थी. उत्तर प्रदेश पुलिस के हाथों में अयोध्या की मुख्य कमान थी. घटना के दिन उत्तर प्रदेश पुलिस पीछे हट चुकी थी. उसे यह आदेश थे कि किसी भी कीमत पर कारसेवकों पर गोली नहीं चलाई जाएगी.

कारसेवक गुंबदों पर चढ़ कर उन्हें तोड़ने लगे. इस बात की जानकारी देश के तब के प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव को मिली. वे मुख्यमंत्री कल्याण सिंह से फोन पर संपर्क करने की कोशिश करने लगे.

कल्याण सिंह अपने सरकारी आवास में थे. इस के बाद भी फोन पर बात नहीं की. वे भाजपा के नेताओं के संपर्क में थे. जैसा निर्देश मिल रहा था, वैसा काम कर रहे थे. पुलिस ने गोली नहीं चलाई और अयोध्या में कारसेवकों का कब्जा हो गया. 1-1 कर के तीनों गुंबद गिरते गए.

केंद्र सरकार ने कैबिनेट मीटिंग शुरू की. उस में यह फैसला लिया जाना था कि उत्तर प्रदेश की कल्याण सरकार को बरखास्त कर दिया जाए.

यह सूचना मिलते ही जैसे ही साढ़े 5 बजे तीनों गुंबद गिर गए, कल्याण सिंह 30 मिनट बाद राजभवन गए और मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया.

सरस सलिल

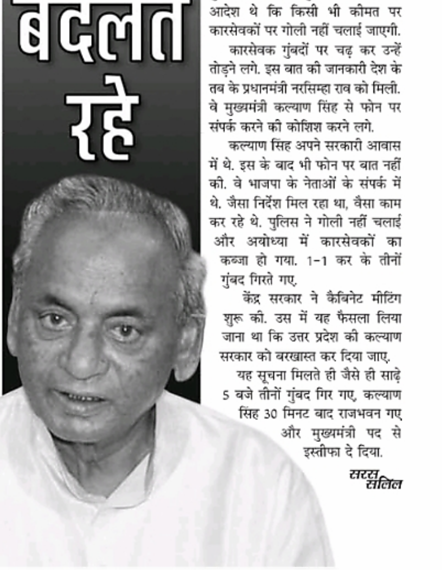

जब तक गुंबद पूरी तरह से गिर नहीं गए और वहां पर अस्थायी राम मंदिर नहीं बन गया, कल्याण सिंह ने कुरसी नहीं छोड़ी.

कल्याण सिंह ने इस के बाद पूरे देश में 'जनादेश यात्रा' निकाली. उन को 'हिंदू हृदय सम्राट' और 'अयोध्या का नायक' कहा गया.

'चरित्र हनन' की राजनीति

साल 1997 में बहुजन समाज पार्टी और भाजपा के बीच 6-6 महीने की सरकार चलाने का समझौता हुआ. कल्याण सिंह 21 अक्तूबर को मुख्यमंत्री बने. कल्याण सिंह को यह लगा कि वे अब भाजपा के बड़े नेता हो चुके हैं. इस सोच के बाद ही उन का टकराव उस समय के नेता अटल बिहारी वाजपेयी से हो गया.

अगड़ी जाति के नेताओं को यह लग चुका था कि कल्याण सिंह को अब जमीन पर लाना है. इस के बाद कल्याण सिंह के साथ राजाजीपुरम क्षेत्र की सभासद कुसुम राय के संबंधों को ले कर 'चरित्र हनन' की राजनीति शुरू हुई. ऊंची जातियों के समर्थक मीडिया में रोज नई खबरें गढ़ी जाने लगीं. लोग राजाजीपुरम के नाम को मजाक में 'रानीजीपुरम' कहने लगे.

अहम की इस लड़ाई में अयोध्या के नायक कल्याण सिंह की हार हुई. उन को भाजपा से बाहर कर दिया गया.

साल 2002 में कल्याण सिंह ने राष्ट्रीय जनक्रांति पार्टी का गठन किया, पर इस में वे कामयाब नहीं हुए. साल 2004 में वे वापस भाजपा में आए. 2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान कल्याण भाजपा से बाहर हो गए. उस समय उन्होंने कहा कि अब वे वापस भाजपा में नहीं जाएंगे. यह दौर वह था, जब भाजपा में पिछड़ी जातियों की जगह अगड़ी जातियों का कब्जा था.

साल 2013 में जब भाजपा में पिछड़ी जातियों को अहमियत दी जाने लगी, तो कल्याण सिंह को वापस भाजपा में लाया गया. साल 2014 में राजस्थान और साल 2015 में हिमाचल प्रदेश के प्रभारी राज्यपाल बने.

साल 2017 में कल्याण सिंह के पोते संदीप को उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में मंत्री बनाया गया. साल 2019 में कल्याण सिंह वापस भाजपा कार्यकर्ता के रूप में काम करने लगे.

साल 2021 के अगस्त महीने में कल्याण सिंह की मौत हो गई, जिस के बाद भाजपा ने पूरे सम्मान के साथ उन का अंतिम संस्कार किया. ●

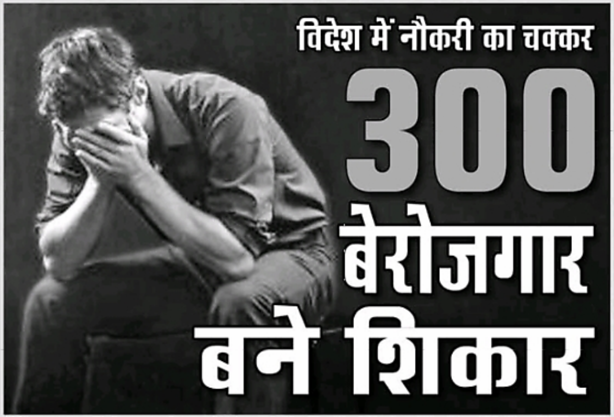

विदेश में नौकरी का चक्कर

300 बेरोजगार बने शिकार

शंभू शरण सत्यार्थी

विदेश में नौकरी दिलाने के नाम पर बेरोजगार नौजवानों को ठगने का सिलसिला लगातार जारी है. बिहार की राजधानी पटना समेत गांवदेहात के इलाकों तक में ठगी करने वाले एजेंटों ने जाल फैला रखा है.

जीवीएम मैन पावर नामक कंपनी पिछले कई महीनों से पटना में लोगों को विदेश भेजने के नाम पर 12,000 से 17,000 रुपए और पासपोर्ट भी जमा कर रही थी.

जांच के दौरान यह पता चला कि इस कंपनी का कहीं कोई रजिस्ट्रेशन नहीं है. इस कंपनी ने पटना के अलावा विशाखापट्टनम और गुडगांव में भी औफिस खोल रखा था.

पटना के नियोजन भवन में बने इमिग्रेशन औफिस में इस कंपनी के खिलाफ 100 लोग शिकायत दर्ज करा चुके हैं. बिहार और झारखंड के तकरीबन 300 नौजवानों ने विदेश जाने के नाम पर पैसे और पासपोर्ट दिए.

औरंगाबाद जिले के मुसलिमाबाद के बाशिंदे 35 साल के मोहम्मद अरमान ने बताया, "मुझे गांव के ही एक लड़के ने इस कंपनी के बारे में बताया था. मैं ने कंपनी के औफिस जा कर बात की. उस ने 17,000 रुपए की मांग की और पासपोर्ट जमा कर लिया.

"मुझे औफिस स्टाफ द्वारा बताया गया कि अबुधाबी की एडनाक और नैशनल पैट्रोलियम कौंट्रैक्टिंग कंपनी में काम मिलेगा. मैं ने दोबारा औफिस में जा कर पैसे जमा कर दिए.

"एक महीने के अंदर उस ने वीजा आने का आश्वासन दिया. बोला कि और लड़के जाना चाहते हैं तो उन लोगों को भी लेते आइएगा. 20 दिनों के बाद जब औफिस गए तो मालूम हुआ कि वे लोग यहां से फरार हो गए हैं."

यह कंपनी बिहार और झारखंड के 300 से ज्यादा नौजवानों से पैसा और पासपोर्ट ले कर फरार हो चुकी है. एक साल के अंदर इस तरह के कई मामले सामने आ चुके हैं. जालसाजी करने वाले लोगों को सजा नहीं मिल पा रही है. इस की वजह से उन लोगों का मनोबल बढ़ता जा रहा है.

विदेश में नौकरी के नाम पर झांसा दे कर लोगों को ठगने वालों पर नकेल कस पाना आसान काम नहीं है. ठगी के मामले दब कर रह जा रहे हैं. जो मामले सामने आ रहे हैं, उन में थाने में एफआईआर दर्ज करना मुश्किल हो रहा है.

पटना के विदेश मंत्रालय के दफ्तर के जरीए दर्ज होने वाले मामलों में अभी तक कुछ खास नहीं हो पाया है. पटना में ही ठगी के 4-5 मामले उजागर हो चुके हैं. इन में किसी भी कुसूरवार की गिरफ्तारी या दूसरी तरह की कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है. ठगी के शिकार नौजवान थाना, कोर्टकचहरी का दरवाजा लगातार खटखटा रहे हैं.

पटना में पृथ्वी इंटरनैशनल और गल्फ इंटरनैशनल के खिलाफ भी मामला दर्ज हो चुका है. इसी तरह बिहार के सिवान, गोपालगंज, मोतिहारी, झारखंड के रांची, जमशेदपुर, कोडरमा में नौकरी के लिए विदेश भेजने के नाम पर फर्जीवाड़े के मामले दर्ज किए जा चुके हैं. जालसाजी करने वाले पुलिस प्रशासन की पकड़ से दूर हैं.

श्रम संसाधन मंत्री जीवेश मिश्रा ने जीवीएम कंपनी द्वारा ठगी के शिकार हुए नौजवानों की पूरी डिटेल मांगी है. मंत्री ने आरोपियों पर कार्यवाही किए जाने की बात कही है.

फर्जी एजेंटों का जाल

बिहार और झारखंड के कई जिलों समेत गांवदेहात के इलाकों में फर्जी एजेंटों का नैटवर्क है. मामला खुले नहीं, इसलिए इश्तिहार जारी करने के बजाय गांवों में एजेंट भेजे जाते हैं. इन के जरीए बेरोजगार नौजवानों को फंसा कर उन से पैसे और पासपोर्ट ले लिया जाता है.

क्यों जाते हैं लोग विदेश

देश में रोजगार नहीं मिलने और विदेश में ज्यादा पैसे मिलने की वजह से यहां के बेरोजगार नौजवान विदेश में जाना चाहते हैं. उचित सलाह और सही जानकारी नहीं मिलने की वजह से वे ठगी के शिकार हो जाते हैं.

जालसाजी करने वाले लोगों पर कार्यवाही नहीं हो पाती है, इस की वजह से वे लोग कंपनी का नाम बदल कर अलगअलग जगहों पर औफिस खोल कर बेशुमार पैसे फर्जी ढंग से कमा रहे हैं.

भारतीय युवा मंच के अध्यक्ष शहबाज मिनहाज ने बताया कि इस तरह के फर्जी जालसाज गिरोहों को कड़ी से कड़ी सजा नहीं मिली तो उन का नैटवर्क और बढ़ता रहेगा और बेरोजगार नौजवान ठगी के शिकार होते रहेंगे. ●

हिंदू धर्म में गोबर की पूजा इनसानों से छुआछूत

धीरज कुमार

हिंदू धर्म में पेड़पौधे की पूजा की जाती है. तुलसी के पौधे में रोजाना जल दिया जाता है. पीपल के पेड़ के नीचे दीया जलाया जाता है और पूजा की जाती है.

औरतें बरगद के पेड़ के नीचे पूजा कर के अपने पतियों की लंबी उम्र होने की कामना करती हैं. इस तरह अनेक पेड़पौधे हैं, जिन की पूजा हिंदू धर्म में रीतिरिवाज और श्रद्धा से की जाती है.

इस धर्म में जानवरों की पूजा भी की जाती है. गाय को माता की तरह सम्मान दिया गया है. बैल को भी पूजा जाता है. बैल को भगवान शंकर की सवारी माना जाता है. चूहे को गणेश की सवारी माना जाता है. बंदर को हनुमान का रूप माना जाता है. यहां तक कि विषधर सांपों की भी पूजा नागपंचमी के दिन की जाती है, जिन के काटने से आदमी की तुरंत मौत हो सकती है.

इस धर्म में नदी, तालाब, पोखर, जलाशय की पूजा की जाती है. कुछ नदियों को तो काफी पवित्र माना जाता है, भले ही उन में काफी गंदगी हो.

गंगा, यमुना जैसी नदी को मोक्षदायिनी माना जाता है. पहाड़ों को भी पवित्र माना जाता है और पूजा जाता है, इसीलिए अनेक मंदिर पहाड़ों पर भी बने हैं. लोग वहां भगवान के दर्शन करने जाते हैं.

इस तरह से देखा जाए, तो हिंदू धर्म में जानवरों, पशुपक्षियों, कीड़ेमकोड़ों, पेड़पौधों सभी की पूजा की जाती है. पर इनसानों से काफी भेदभाव किया जाता है. सिर्फ भेदभाव ही नहीं किया जाता है, बल्कि लोगों के बीच काफी छुआछूत पनपी है.

रोहतास के डेहरी ब्लौक के विनोद कुमार कुशल कारोबारी हैं. वे हिंदू धर्म पर चुटकी लेते हुए कहते हैं, "हिंदू धर्म में गाय, बैल, बंदर, चिड़िया, पेड़पौधे, कीड़ेमकोड़े, सांप सब को सम्मान दिया जाता है, पर इनसानों को नफरत से देखा जाता है.

"यहां तक कि हिंदू धर्म में गोबर की पूजा भी की जाती है, पर इनसानों से भेदभाव किया जाता है. हिंदू धर्म में बिना गोबर के पूजा नहीं होती है. सभी पूजा में गोबर की अहमियत है यानी गोबर होना जरूरी है. कुछ तरह की पूजा में तो गाय की बछिया के मूत्र का भी इस्तेमाल किया जाता है. उसे काफी पवित्र माना जाता है. उस से कोई घृणा नहीं करता है.

"पर, यहां आम इनसान की तो कोई अहमियत नहीं है. जिस इनसान से आप अपने खेतों में काम करवाते हैं, मजदूरी करवाते हैं, उस से आप के खेतखलिहान, फसल में छूत नहीं लगती है. लेकिन आप उसे जब अपने घर खाने के लिए देते हैं, तो उसे थाली में नहीं खिलाते हैं, बल्कि पत्तल में खिलाना पसंद करते हैं. उसे छूते ही आप अपवित्र मानने लगते हैं."

समाज पर कलंक है जातिवाद

ओमप्रकाश बाल्मीकि अपनी आत्मकथा 'जूठन' में लिखते हैं कि बचपन में उन के मातापिता गांव के भोज, जलसे में फेंकी गई पत्तलों से बचा भोजन इकट्ठा कर घर लाते थे. फिर उसे धूप में सुखा कर रख देते थे. जरूरत पड़ने पर उसे पानी में भिगो कर खाते थे.

ये बातें काल्पनिक नहीं हैं. यह तो सचाई है. यह सब छुआछूत के चलते हालफिलहाल तक चलन में था. लेकिन हिंदू धर्म के ब्राह्मणों, पंडितों, पुजारियों, धर्माचार्यों ने कभी इस का विरोध नहीं किया. कभी भी उन्हें मुख्यधारा में लाने की कोशिश नहीं की.

आज जब गरीब तबके में जागरूकता फैली तो यह काम बंद हो चुका है. लेकिन ऊंचे तबके के लोगों के मन में आज भी इस बात की कसक है कि उन की मरजी से जीने वाले लोग आज अपनी मरजी से जीने लगे हैं. कल तक वे निचले तबके के लोगों पर जुल्म करते थे और आज भी कर रहे हैं. बस थोड़ी कमी आ गई है, क्योंकि आज इन में स्वाभिमान जागने लगा है.

आज भी कुछ गांवों में ऊंचे तबके के लोग निचले तबके के लोगों को जातिसूचक शब्दों से ही संबोधित करते हैं. वे अपने नामों से कम जाने जाते हैं, बल्कि अपने जातिसूचक नामों से ज्यादा जाने जाते हैं.

यही वजह है कि आज भी निचला तबका इन जातियों से दूरी बना कर रहता है. कई बार तो वे हिंदू धर्म में रह कर कुंठा का अनुभव करते हैं, इसीलिए कुछ लोग धर्म परिवर्तन की चाह रखने लगे हैं. उन का कहना है कि जब हिंदू धर्म हम लोगों को जोड़ कर रख नहीं सकता है, तो उस धर्म को अपने माथे पर ढोने से क्या फायदा.

गांव में आज भी ऊंचे तबके वालों के घर भोज, जलसे, जन्ममृत्यु, विवाह जैसे मौकों पर लोगों को भोज खिलाया जाता है, तो सब से पहले ब्राह्मणों को खिलाया जाता है. इस के बाद ऊंची जाति के लोग खाते हैं. इस के बाद निचले तबके के लोगों को खिलाया जाता है. वह भी गलियों या खेतों में जमीन पर बैठा कर खिलाया जाता है, इसीलिए आज निचले तबके के पढ़ेलिखे नौजवान इन के घरों के जलसे, भोज खाने से परहेज करते हैं.

आपसी नफरत का ही नतीजा है कि निचले तबके के लोगों का गांव में घर एक तरफ किनारे होता है, जबकि ऊंची जाति वाले लोगों का घर दूसरी तरफ अलग होता है.

गांव में जाने के बाद इस बात का एहसास हो जाता है कि ऊंची जाति वालों का घर किधर है और निचले तबके वालों का घर किधर है. कोई भी इसे आसानी से पहचान सकता है.

यह जातीय नफरत का ही नतीजा है कि आज भी गांव का समाज वैसा के वैसा ही है जैसा आजादी के समय था. गांवों में बिजली आ गई है, सड़कें बन गई हैं, मोबाइल फोन और इंटरनैट का खूब इस्तेमाल हो रहा है, पर अगर नहीं बदला है तो लोगों के विचार, भेदभाव करने का नजरिया, छुआछूत करने की आदत. लोगों को निचले तबके से नफरत करने की सोच में कोई बदलाव नहीं आया है. आज भी सब जस का तस है. ●

पल-पल जीवन में आनन्द अविरल

बैद्यनाथ
असली आयुर्वेद

वीटा-एक्स गोल्ड
प्लस

मूसली
की शक्ति

Baidyanath
Vita-Ex
GOLD
Plus
Power of
MUSLI
For Vigour and Vitality

जब उत्साह हो जीने का, जब हर पल जीना चाहें भरपूर बैद्यनाथ का वीटा-एक्स गोल्ड प्लस, स्वर्ण भस्म और मूसली की ताकत से भरपूर। जोश के लिए, उमंग के लिए आनंद से भरपूर जीवन के लिए।

अपार शक्ति और आनंद के लिए

CIN-U24233WB1947PTC015374

SHREE Baidyanath AYURVED BHAWAN PRIVATE LIMITED, PATNA
www.baidyanathayurveda.com Customer Helpline No.: +91 8252224135 /baidyanathinfo

पीने का साफ पानी बुनियादी हक

सुनील शर्मा

हरियाणा के सोनीपत जिले का सिसाना गांव दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं है. आज भले ही वहां घरघर सरकारी टोंटियां लग चुकी हैं, पर मेरा आंखों देखा पीने के पानी की समस्या को भयावह कर देने वाला अनुभव रहा है.

कुछ साल पहले तक वहां की औरतों और लड़कियों, यहां तक कि मर्दों की भी एक बड़ी समस्या थी, दूर से पीने का पानी ढोना. एक घड़ा पानी लाने में आधा घंटा.

सोचिए कि टंकी भरने में कितने घंटे बरबाद होते होंगे. तब वहां की लड़कियों की शादी ऐसी जगह करने की सोची जाती थी कि वे भविष्य में सिर पर पानी ढोतेढोते बाकी की जिंदगी न गुजार दें. देश में अभी भी हालात नहीं बदले हैं.

कितनी हैरत और दुख की बात है कि इस साल 15 अगस्त के मौके पर सरकार द्वारा 'अमृत महोत्सव' मनाया गया और देश की ज्यादातर जनता दो घूंट पीने के पानी को तरस रही है.

'विश्व जल दिवस' पर द इंस्टीट्यूशन औफ इंजीनियर्स में आयोजित गोष्ठी में निदेशक, भूगर्भ जल विभाग के प्रतीक रंजन चौरसिया ने कहा कि साल 2025 तक लोग जल संकट से जूझ रहे होंगे. पीने के पानी के लिए लोगों को भटकना पड़ेगा.

अभी भी पूरी दुनिया में तकरीबन 15 फीसदी से ज्यादा लोगों को साफ पानी पीने के लिए नहीं मिल पा रहा है. प्रदूषित पानी पीने से हर साल लोगों की मौतें सामने आती हैं.

जिस देश में कभी नदियों का बड़ा नैटवर्क रहा हो, उस देश में जल संकट बड़ी समस्या है. इस के नियंत्रण के लिए तुरंत ठोस कदम उठाए जाने की जरूरत है.

इस गोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रोफैसर जमाल नुसरत ने कहा कि पानी का संकट नहीं है. समस्या जल प्रबंधन की है. भूगर्भ जल के दोहन को रोकना होगा. ऐसा नहीं कर पाए तो सतह का पानी खत्म होते ही नदियां, तालाब और मौजूदा कुएं सूख जाएंगे. इस के बाद के भयावह हालात की कल्पना हम खुद कर सकते हैं.

ऐसे लोगों की चिंता जायज है, तभी तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार अपने भविष्य के चुनावों में जनता से जुड़ी कल्याणकारी योजनाओं पर फोकस कर के लोगों के वोट पाना चाहती है. इस में पीने के पानी की समस्या को दूर करने वाली जल संरक्षण और हर घर पेयजल जैसी योजनाओं पर फोकस किया जा रहा है.

पर क्या केवल लाल किले की प्राचीर से घोषणाओं को याद दिला देने से वे पूरी हो सकती हैं? यह सवाल पूछने की वजह यह है कि उत्तर प्रदेश के बरेली में जमीन के अंदर 80 फुट नीचे के पानी में ईकोलि बैक्टीरिया मिला है, जो कई खतरनाक बीमारियों को फैलाता है.

दिल्ली में जमीनी पानी का स्तर हर साल 2 मीटर नीचे गिर रहा है. माहिरों का कहना है कि अगर जल्द ही इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया, तो आने वाले समय में हालात बद से बदतर हो जाएंगे.

क्या है हर घर जल योजना

जब मोदी सरकार साल 2019 के लोकसभा चुनाव में दोबारा सत्ता में आई थी, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जल संरक्षण और पेयजल आपूर्ति के लिए 3 लाख करोड़ से ज्यादा की योजना का ऐलान किया था, जिस के तहत साल 2024 तक सभी घर तक पानी की पाइपलाइन और नल से पानी पहुंचाने का टारगेट रखा गया है.

इस योजना के पीछे सोच यह है कि साल 2023 तक सरकार के जरीए 20 करोड़ आदर्श गांव बन जाएं.

पर क्या यह सब करना इतना आसान है? बिलकुल नहीं. वजह, गरीबी की मार झेल रहे भारत में आज भी बहुत से लोगों ने शौचालय की तरह सप्लाई का नल नहीं देखा है.

एक रिपोर्ट के मुताबिक, देश की तकरीबन 20 करोड़ आबादी पानी के दूसरे स्रोत पर निर्भर है. बिहार और उत्तर प्रदेश में, जहां तरक्की के नए ढोल पीटे जा रहे हैं, वहां आज भी 5 फीसदी घरों में नल का कनैक्शन है.

वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले 20 सालों में सूखे की वजह से भारत में 3 लाख से ज्यादा किसानों ने खुदकुशी की और हर साल साफ पीने के पानी की कमी के चलते 2 लाख लोगों की मौत हो रही है.

मौजूदा दौर में भारत में जहां शहरों में गरीब इलाकों में रहने वाले 9.70 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिल पाता है, वहीं गांवदेहात के इलाकों में 70 फीसदी लोग प्रदूषित पानी पीने को मजबूर हैं. तकरीबन 33 करोड़ लोग बहुत ज्यादा सूखे वाली जगहों पर रहने को मजबूर हैं. जल संकट की इस बदहाली से देश की जीडीपी में तकरीबन 6 फीसदी का नुकसान होने का डर है.

देश के तमाम राज्यों की राजधानियां और दूसरे बड़े शहर तो इतने ज्यादा पत्थरदिल हो गए हैं कि वहां बारिश का पानी जमीन से ज्यादा गटर में चला जाता है. हरियाणा के अंबाला शहर का भूजल स्तर 10 मीटर नीचे जा चुका है. कई जगह तो हैवी मोटर तक नहीं खींच पा रही है पानी, बढ़वानी पड़ रही बोरिंग की पाइपलाइन.

हरियाणा और पंजाब के किसानों को यह हिदायत दी गई है कि वे धान की खेती न कर के दूसरी फसलों पर फोकस करें, ताकि पानी की बचत हो सके.

हरियाणा में 'फसल विविधीकरण योजना' के तहत धान के बजाय पानी की बचत करने वाली फसलों की बिजाई करने पर प्रति एकड़ 7,000 रुपए प्रोत्साहन राशि दी जाएगी.

जब हालात इतने खतरनाक हों, तो ऐसे में इस तरह की कल्याणकारी योजनाओं का भविष्य अधर में लटका ही नजर आता है, क्योंकि नीति आयोग की रिपोर्ट की मानें तो देश में 60 करोड़ से ज्यादा लोग भयंकर जल संकट का सामना कर रहे हैं. अगले 10 साल में पानी की मांग दोगुना बढ़ने का अंदाजा है, जबकि इस के लिए मौजूदा स्रोत में 5 फीसदी की कमी आ जाएगी.

जमीनी पानी गर्त में जा रहा है और आसमानी पानी का कोई ठिकाना नहीं है. ऊपर से कोरोना महामारी, जिस ने देश को पंगु बना दिया है. ●

रूममेट के साथ फ्रैंडशिप

रोहित

26 साल का अभिषेक कुमार बिहार के समस्तीपुर जिले में एक किसान परिवार से है. साल 2013 में 12वीं जमात के इम्तिहान अच्छे नंबरों से पास करने के बाद पत्रकार बनने का सपना लिए वह देश की राजधानी दिल्ली आ गया.

पत्रकारिता में ग्रेजुएशन की पढ़ाई करने के लिए उस ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के रामलाल आनंद कालेज में दाखिला लिया. दाखिला लेने के साथ ही अभिषेक ने कालेज से 16 किलोमीटर दूर लक्ष्मी नगर मैट्रो स्टेशन में एक पीजी किराए पर लिया. लेकिन पीजी लेने में सब से बड़ी दिक्कत उस के किराए की थी.

लक्ष्मी नगर आमतौर पर छोटे शहरों से आए नौजवानों से भरा रहता है. वहां के मकानों की दीवारें कोचिंग सैंटर के बोर्ड से पटी पड़ी हैं. यही वजह है कि ज्यादातर कोचिंग की पढ़ाई करने वाले छात्रों का हब लक्ष्मी नगर बना हुआ है, जिस के चलते किराए पर कमाई का कारोबार वहां खूब फलफूल रहा है.

रूममेट की खोज

लक्ष्मी नगर में उस दौरान अभिषेक अकेला रह कर 6,000 रुपए महीना कमरे का किराया देने की हालत में नहीं था, इसलिए वह चाह रहा था कि जल्द ही उस का कोई रूममेट बने, जिस के साथ वह कमरे के खर्चों को शेयर कर सके.

इस मसले पर अभिषेक का कहना है, "ज्यादातर लोग जानपहचान वाले को ही रूम पार्टनर रखना पसंद करते हैं और यह ठीक भी रहता है, क्योंकि इस से रूममेट को समझनेसमझाने में ज्यादा समय नहीं खपता और एकदूसरे से कोई बात बेझिझक कही जा सकती है.

"बहुत बार जब 2 अनजान लोग एकसाथ रहते हैं, तो काम और पैसों को ले कर झिकझिक बनी रहती है. छोटेछोटे खर्चों या काम में बड़ेबड़े झगड़े या शक की गुंजाइश बन जाती है."

गलत रूममेट

उत्तर प्रदेश के आगरा की रहने वाली 29 साल की श्रुति गौतम दिल्ली यूनिवर्सिटी से पीएचडी कर रही हैं. वे मुखर्जी नगर में फ्लैट ले कर रह रही हैं. साथ ही, वे बतौर गैस्ट टीचर कालेज में पढ़ाती भी हैं.

श्रुति गौतम कहती हैं, "मैं साल 2016 में दिल्ली आई थी. साल 2016-17 में मैं जिस फ्लैट में रही, वहां सब ठीक चल रहा था. वहां मैं सब से छोटी थी, बाकी मेरे से कुछ सीनियर थे. फिर मैं ने जब रूम बदला, तो मुझे अपने साथ रूममेट की जरूरत थी.

"उस दौरान मुझे 2 लड़कियां मिलीं. वे दोनों उम्र में मुझ से छोटी थीं. हम ने मिल कर फ्लैट लिया. शुरू में लगा कि सब ठीक है, लेकिन धीरेधीरे समस्या आती है कि आप की ट्यूनिंग नहीं मिलती. जैसे आप सोते हैं 10 बजे और रूममेट को 2 बजे सोने की आदत है. आप को खाने में कुछ पसंद है, तो उसे कुछ दूसरा. ऐसे में झगड़े होने लगते हैं."

काम का हिसाब

श्रुति गौतम कहती हैं, "साल 2018 की बात है, तब मैं आईपी में कालेज गैस्ट टीचर के तौर पर पढ़ा रही थी. मेरी एक रूममेट ने मेन डोर की चाबी लौक पर ही छोड़ दी, जिस के बाद कमरे से लैपटौप और मोबाइल फोन चोरी हो गया था.

"उस समय मैं ने उसे खूब डांट दिया था. उसे बुरा लग गया और उस के मन में मेरे लिए कड़वाहट बैठ गई. तब से हमारी बात ठीक से हुई नहीं और आखिर में उसी ने कमरा छोड़ दिया."

श्रुति गौतम आगे कहती हैं, "रूम में काम बंटा हुआ होता है, लेकिन उस के बावजूद कोई काम करने को राजी नहीं होता. गंदे बरतन पड़े हैं तो पड़े ही रहेंगे. टायलैट सब से साफ रहने वाली जगह

ऐसे बनाएं रूममेट से अच्छा रिश्ता

कमरे की साफसफाई

रूममेट का आपस में झगड़ा इसी को ले कर ज्यादा होता है, इसलिए जरूरी है कि इस पर ध्यान दिया जाए. इस के लिए कुछ नियम बनाए जा सकते हैं. जैसे, बारीबारी से कमरा साफ करें, भीतर आने से पहले जूते साफ कर लें, अपने कपड़े समय पर धो लें, टायलैट इस्तेमाल करने के बाद साफ जरूर करें, कमरे के मैनेजमेंट के लिए अलमारी, बुक रैक, डस्टबिन, पैन बौक्स वगैरह का इस्तेमाल करें, ताकि चीजें यहांवहां गुम न हों.

हिसाब रखें सही

कई बार लेनदेन में रूममेट के साथ अनबन हो जाती है. अगर एक बार पैसों को ले कर अनबन होती है, तब वह शंका आजीवन मिटाए नहीं मिटती है, इसलिए हिसाब बेहतर और क्लियर रखें.

रूममेट की सहूलियत का खयाल

कई बार हमारी केवल अपनी सहूलियत दूसरे के लिए सिरदर्द भी बन जाती है. हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि आप के साथ उस रूम में कोई और भी है, जिसे कुछ तरह की चीजों से दिक्कत हो सकती है. जैसे देर रात फोन पर बात करना, देर रात तक टैलीविजन देखना या मोबाइल फोन पर बात करना वगैरह.

प्राइवेसी का ध्यान रखना

ऐसा नहीं है कि रूममेट के साथ हर बात शेयर की जाए या उसे हर बात बताने पर जोर दिया जाए. हर किसी की अपनी प्राइवेसी होती है. उस की इज्जत करना जरूरी है. अगर रूममेट आरामदायक महसूस नहीं कर रहा, तो उस की पर्सनल लाइफ में दखल न दें.

बिना पूछे सामान न इस्तेमाल करें

कई बार लोग रूममेट के सामान को अपना समझ कर इस्तेमाल करने लगते हैं, जो गलत है खासकर बगैर पूछे. ध्यान रहे कि खुद के लिए जरूरत का सामान जोड़ लें. अगर मुमकिन नहीं है, तो रूममेट से सामान इस्तेमाल करने से पहले इजाजत लें.

होनी चाहिए और सभी को इसे साफ करना चाहिए, लेकिन बोलबोल कर भी काम पूरा नहीं किया जाता.

"खाना बनाते समय कई झगड़े होते हैं. जो खाना बनाने वाला है, वह कह दे कि प्याज काट दो या आटा गूंद दो तो काम से कन्नी काटने के लिए बहाने बनते हैं कि मुझे भूख नहीं है. कपड़े जहांतहां फैले होते हैं. इस के साथ हिसाबकिताब में भी दिक्कत आ जाती है. इस का आखिर में एक ही हल निकलता है कि आप एक कामवाली रख लो."

धर्मजाति के फंडे

अभिषेक बताता है, "लक्ष्मी नगर या मुखर्जी नगर में ही देखो, तो ज्यादातर अपनी जातबिरादरी के लोगों के साथ ही रहते हैं और शायद रहना पसंद भी करते हों. इसे समझना कोई बड़ी बात नहीं. कालेज में पढ़नेलिखने आए नौजवान जब कालेज में जाते हैं, तो अपने जातिधर्म के चुनाव उम्मीदवार को ही जिताते हैं, उसी के लिए नारे लगाते हैं.

"मैं यह नहीं कह रहा कि सिर्फ जातिवादी या सांप्रदायिक सोच के चलते ऐसा है, मसला आराम का भी होता है. अपनी बिरादरी में वे ज्यादा आरामदायक महसूस करते हैं, कल्चर को ले कर जल्दी एकदूसरे की बातें समझ लेते हैं.

"बहुतों पर पारिवारिक दबाव भी होता है कि किस के साथ रहना है या नहीं रहना है. सब से बड़ी वजह यह है कि ज्यादातर बाहरी नौजवान जानपहचान वालों के साथ ही यहां रहते हैं. हमारा सामाजिक ढांचा ऐसा है कि हम अपनी बिरादरी और धर्म से अलग किसी दूसरे से ज्यादा नजदीकियां बना नहीं पाते हैं."

उत्तर प्रदेश के महाराजगंज जिले के बिसनपुर गांव के सनी कुमार एसटी समाज से आते हैं. वे गांव से मीलों दूर इलाहाबाद शहर के कटरा इलाके में किराए का कमरा ले कर कानून की पढ़ाई कर रहे हैं.

सनी कुमार कहते हैं, "रूममेट ढूंढ़ते हुए जाति से ज्यादा धर्म को देखा जा रहा है, खासकर यह मामला हिंदू और मुसलमान में ज्यादा देखने को मिलता है. जिस इलाके में मैं रहता हूं, वहां अलगअलग धर्म के लोगों का एकसाथ रूम शेयर करने का उदाहरण मैं अभी तक देख नहीं पाया हूं, लेकिन जाति से अलग उदाहरण दिख जाते हैं. यह मैं ने गौरखपुर में भी महसूस किया था."

इस मसले पर श्रुति गौतम के विचार अलग हैं. वे कहती हैं, "मेरे खयाल से रूममेट ढूंढ़ते समय आज का नौजवान तबका धर्मजाति नहीं देखता है. वजह यह है कि ज्यादातर बाहर से आने वाले युवा एक टारगेट ले कर आते हैं, उस के आड़े ये चीजें इतनी माने नहीं रखतीं.

"हां, यहां पेंच पड़ता है परिवार का. अगर किसी का बेटा या बेटी बाहर पढ़ने गए हैं या नौकरी के लिए आए हैं, तो परिवार नजर रखता है कि वह किस के साथ है. उस की पार्टनर किस धर्मजाति से है. ऐसे में इन चीजों को ध्यान में रख कर रूममेट की जातिधर्म पर सोचते होंगे. लेकिन जिन्हें इन बातों से कुछ फर्क नहीं पड़ता, वे परिवार में इन बातों को बताते ही नहीं हैं या झूठ कह देते हैं." ●

रूममेट की सही पहचान

भले ही रूममेट के साथ थोड़े समय के लिए ही जिंदगी बितानी होती है, पर फिर भी एक बेहतर रूममेट की पहचान करना जरूरी होता है. इस के लिए कुछ बातों के बारे में जान लेना बहुत जरूरी है :

सोशल मीडिया अकाउंट देखें

अगर किसी एप की मदद से रूममेट की खोज की है, तो उस के सोशल मीडिया अकाउंट्स को चैक कर लें. वहां उस की जानकारी मिल जाएगी, उस का तौरतरीका और रवैए की पहचान होने में मदद मिलेगी.

पहचान के लिए पब्लिक स्पेस

रूममेट की पहचान जैसे भी या जहां से भी हो, पहली मुलाकात में एकांत जगह या रूम में बुलाने से बचना चाहिए. एकदूसरे को जानने के बाद ही मेलजोल आगे बढ़ाएं.

पसंदनापसंद पर खुल कर बात

रूममेट के साथ रोज 10-12 घंटे गुजारने होते हैं, इसलिए जरूरी है कि एकदूसरे की पसंदनापसंद जानें. खुल कर पूछें और बताएं शराब, सिगरेट, मांसाहार और पार्टी के मामले में.

रूममेट के डौक्यूमैंट देखें

अगर इन सब के बाद वह रूममेट बनने को तैयार है, तो उस के डौक्यूमैंट्स वैरिफाई करें. इस में आधारकार्ड, वोटर आईडी, औफिस या कालेज कार्ड हो सकता है.

आयुर्वेद से आयुष्यमान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरी आयु २४ वर्ष है, मेरा रंग साफ है पर बीते कुछ वर्षों से चेहरे पर कालापन आता जा रहा है। -आर. पारे, शिवपुरी.

उ. आप त्वचा पर सप्ताह में एक बार स्टीम वाश लें। इसके साथ ही हर्बल तत्वों से युक्त *'सुगंधा वर्णनिखार क्रीम'* चेहरे पर नियमित हल्के हाथों से लगा सकते हैं।

प्र. मेरी समस्या यह है कि कोशिश करने के बाद भी मैं बोलने में अटक जाता हूं। समस्या का उपाय बताएं। -विजय, पुरूलिया.

उ. समस्या के लिए आप *'वॉईस'* सिरप २-२ चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं। साथ ही अपना आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु रोजाना कुछ समय आईने के सामने खड़े होकर खुद से बातें करें।

प्र. मेरे सभी दोस्त अच्छे-खासे हैं पर मेरा शारीरिक विकास औसत ही है। उचित सलाह दें। -पुष्पेन्द्र कुमार, नई दिल्ली.

उ. ग्रंथि-विकार या हार्मोनल असंतुलन से भी शारीरिक विकास प्रभावित होता है। आप चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु *'हाईटॉप'* सिरप नियमित सेवन कर सकते हैं। साथ ही सूर्य नमस्कार, ताड़ासन अथवा खिंचाव वाले व्यायाम करें।

प्र. मैं नींद में खर्राटों की आदत का शिकार हूं। थकान होने पर तो और भी अधिक लेता हूं। उपचार बताएं। -राजेश, सुरेन्द्रनगर.

उ. समस्या की अनदेखी ना करें, खर्राटे अपने साथ कई अन्य समस्याएं लिए चलते हैं। इस हेतु आप *'स्नोरऑफ'* कैप्सूल रोजाना रात को सोते समय नियमित सेवन कर सकते हैं।

प्र. मेरी उम्र १९ वर्ष है, मैंने शरीर प्रकृति की सुदृढ़ता के लिए कुछ दवाएं ली किन्तु लाभ नहीं मिला। क्या करूं? -अमोल, नागपुर.

उ. आप सबसे पहले चिंता, शोक, अवसाद से दूर रहें साथ ही दिन में दो बार आयुर्वेदिक पुष्टिवर्धक औषधियों से युक्त *'वेटलिफ्टर'* कैप्सूल १-१ सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं।

प्र. मेरी पत्नी के शरीर में उचित आकर्षण की कमी है, उपाय बताएं। -एक पाठक, रोहतक.

उ. समस्या के लिए उन्हें *'सुडोल'* बॉडी टोनर जैल से रोज़ दो बार मालिश करने व *'सुडोल'* बॉडी टोनर कैप्सूल्स दूध के साथ दिन में तीन बार सेवन करने की सलाह दे सकते हैं।

प्र. मेरा पुत्र रात को पेशाब करके सोता है, फिर भी बिस्तर पर पेशाब कर देता है। परामर्श दें। -बी. गुलशन, हैदराबाद.

उ. कई बार यूरीनरी इंफेक्शन अथवा पेट में कृमि हो जाने से भी ऐसी शिकायतें होती हैं। समस्या हेतु आप उन्हें *'बेडवेट'* सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार नियमित रूप से सेवन करवा सकते हैं।

प्र. मैं वर्किंग वुमन हूं, शरीर को फिट रखना चाहती हूं, मुझे शरीर में फूलापन महसूस होता है, क्या करूं? -अर्पणा, पाली.

उ. समस्या के लिए आप *'ओबेरिड'* कैप्सूल २-२ सुबह-शाम पानी के साथ सेवन कर सकते हैं। योगा या व्यायाम करें, मीठी एवं तली हुई चीजों से परहेज करें। *'ओबेरिड'* कैप्सूल का नियमित ९० दिनों तक किया गया सेवन बहुत अच्छे परिणाम देता है।

प्र. मैं ३२ वर्षीय हूं, मुझे बालों को काला, घना, चमकदार व स्वस्थ बनाने का उपाय बताएं। -बी.एस. बंसल, सीतापुर.

उ. आप बालों की जड़ों में भृंगराज, ब्राह्मी, आंवला आदि के हर्बल गुणों से युक्त *'केश वरदान'* हेयर रिवाइटलाइज़र तेल नियमित रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

ratan ayurvedic
Ratan's
सुडोल
बॉडी टोनर जैल
आयुर्वेदिक औषधि
Ratan's Sudol Body Toner Gel
HELPLINE
95166-16688
Sept 2021/1st
प्रमुख आयुर्वेदिक व मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध.
Buy online: www.ratanayurvedic.com

सच्ची सलाह

मैं 21 साल की एक कुंआरी लड़की हूं. मेरे घर वाले मेरी शादी कराना चाहते हैं, पर मैं अभी इस के लिए तैयार नहीं हूं. इस के बावजूद वे लोग किसी तरह मेरी शादी कर के मुझ से छुटकारा पाना चाहते हैं.

इस बात से मैं बहुत ज्यादा तनाव में रहती हूं. मैं आगे पढ़ कर अच्छी नौकरी करना चाहती हूं, पर शादी वाली बात से मैं घबरा जाती हूं. मैं क्या करूं?

आप अपने घर वालों को पढ़ाई की अहमियत बताएं और यह भी समझाएं कि आजकल बिना पढ़ीलिखी लड़की को कोई सलीके का लड़का पसंद नहीं करता. आप घर वालों को साफसाफ बता दें कि अपने पैरों पर खड़ी होने के बाद ही शादी करेंगी तो उन की जिद धीरेधीरे कम हो जाएगी.

पर अगर वे नहीं मानें तो होने वाले पति को अपनी इच्छा बताएं, हो सकता है कि वह आप के मन की बात समझे और मदद भी करे. फिर कोई मुश्किल नहीं रह जाएगी. शादी आज नहीं तो कल कहीं न कहीं तो करनी ही है, इसलिए शादी के नाम से घबराएं नहीं.

●

मैं एक 18 साल की लड़की हूं और पढ़ाई में बहुत अच्छी हूं. मेरे पड़ोस का एक लड़का मेरे पीछे पड़ा है. वह इलाके का बदमाश है और सरेराह मुझे तंग करता है. वह मेरे परिवार वालों को भी धमका चुका है.

आसपड़ोस के लोग भी सीधे उस से भिड़ने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं. इस सब से मेरी जिंदगी नरक हो गई है. मैं क्या करूं?

आप की परेशानी बड़ी और गंभीर है. आप के पास 2 ही रास्ते हैं. पहला, पुलिस में शिकायत करना. इस पर वह गुंडा और बौखला कर आप को व घर वालों को और तंग कर सकता है. दूसरा रास्ता थोड़ा मुश्किल है कि आप या तो महल्ला बदल लें या फिर उस बदमाश से खुद भिड़ें और निबटें.

इस तरह के छिछोरे बदमाश शरीफ लड़कियों के डर का ही फायदा उठा कर उन्हें तंग करते हैं. कई बार तो बड़ा हादसा भी हो जाता है. लेकिन लड़कियां खुद हिम्मत दिखाते हुए उन का मुकाबला करें तो उन के हौसले पस्त होंगे. पर सवाल यही है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे.

●

मैं 28 साल का हूं. मेरी शादी को 4 साल हो गए हैं. मेरी पत्नी को लगता है कि मैं पड़ोस की एक भाभी के चक्कर में उस से दूर होता जा रहा हूं, पर यह सच नहीं है.

दरअसल, पड़ोस की भाभी का स्वभाव बड़ा ही दोस्ताना है और वे हर किसी से हंसीमजाक कर लेती हैं. यही बात सारे झगड़े की जड़ है.

इस बात से नाराज पत्नी घर में तनाव का माहौल बनाए रहती है और मुझ पर चिल्लाती है. वह किसी तरह मानने को तैयार नहीं है. मैं क्या करूं?

झगड़े की जड़ पड़ोसन भाभी है, जब यह बात आप खुद मान रहे हैं तो क्यों उस से जरूरत से ज्यादा हंसतेबोलते हैं, जो आप की पत्नी को पसंद नहीं?

अगर आप की पत्नी भी आप की तरह पड़ोस के किसी भैया या जीजा से इसी तरह पेश आने लगे यानी उस भाभी की तरह हर किसी से दोस्ताना तरीके से पेश आने लगे तो क्या आप बरदाश्त कर लेंगे?

अगर आप का जवाब नहीं में है, तो पत्नी की बात मान लें. और अगर हां में है तो हंसीमजाक पत्नी से करें, यहांवहां मुंह क्यों मारते फिरते रहते हैं?

यह चार दिन की चांदनी है, जिंदगीभर का ठेका नहीं है, लेकिन इन चार दिनों में पत्नी से दूर हो गए तो उस भाभी का कुछ नहीं बिगड़ेगा, क्योंकि महल्ले के कई और देवर आप की ही तरह उस से हंसनेबोलने के लिए लाइन लगाए खड़े नजर आएंगे. ●

क्या शराब ? लीवर खराब

YAKRAT SHODHAN FOR LIVER DISORDERS

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। ''यकृत शोधन'' भाप से बनी वो औषधि हे जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। ''यकृत शोधन'' यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। ''पाचन अमृत सुधा'' 8 चम्मच में 3 से 5 'यकृत शोधन'' मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।
नोट : बच्चों को भी '' यकृत शोधन'' लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

फरिश्ता

आफताब बेगम

"आप को पता है, जीशान सर ने शादी कर ली है..."

"क्या...? कैसे...? कब...? लेकिन वे ऐसा कैसे कर सकते हैं?"

जिस ने भी सुना, वह इन्हीं सारे सवालों की गोलियां दनादन दागने लगा. किसी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था. हर कोई हर किसी से यह सवाल पूछता, मगर जवाब में हर कोई हैरानी जाहिर करता...

लेकिन मोना, वह 'काटो तो खून नहीं' वाली हालत में थी. हर एक की तरफ यों आंखें गड़ाए देख रही थी मानो वह आंखों के रास्ते उस के दिल और दिमाग में उतर जाना चाह रही हो. उसे सच का पता लगाना था कि आखिर जीशान ने क्या वाकई शादी कर ली है? लेकिन नहीं, वे ऐसा कर ही नहीं सकते. वे ऐसा कर कैसे सकते हैं?

मोना के सामने सब से बड़ा सवाल था कि वह 'किस से' सवाल करे और ऐसा वहां कौन था, जो मोना के सवालों भरी आंखों में देख सकने की हिम्मत रखता हो.

बात तब की है, जब मोना हमारे दफ्तर में पहली बार नौकरी के लिए आई थी. सुडौल और कसा हुआ बदन, बड़ीबड़ी आंखें, गोल लुभावना चेहरा और रंग एकदम साफ, बल्कि यों लगता था जैसे वह गुलाबी रंग का गुलाब है, जिसे छू लिया जाए तो वह सकुचा कर खून जैसा लाल हो जाए.

उम्र में छोटी होने के चलते मोना मुझे 'दीदी' कह कर पुकारती थी, जो मुझे पसंद भी था. नहीं तो हर कोई 'मैडममैडम' कह कर ही बुलाता था. 'दीदी' का संबोधन मुझे बहुत अच्छा लगता है, सो मैं ने भी खुशीखुशी उस अनजान सी लड़की को अपनी 'छोटी बहन' समझ लिया था.

धीरेधीरे मोना मेरे काफी करीब आ गई. अपने घरपरिवार के बारे में मुझ से छोटीछोटी बातें भी बेहिचक कहने लगी.

एक दिन अपनी जिंदगी की सब से बड़ी घटना बताते हुए मोना कहने लगी, "उन दिनों मैं 15 साल की थी. मैं जिस स्कूल में पढ़ती थी, उसी स्कूल में रमेश भी था. बहुत ज्यादा हैंडसम, पैसे वाला, मांबाप का एकलौता और अमीर बाप की बिगड़ी औलाद, लेकिन मुझे वह अच्छा लगता था.

"धीरेधीरे पता नहीं चला कि कब वह मेरे दिलोदिमाग पर छा गया. अगर वह एक दिन भी स्कूल नहीं आता तो मैं बेचैन होने लगती और दूसरे दिन पागलों की तरह समय से पहले स्कूल पहुंच कर उस का इंतजार करने लगती.

"मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा था, मुझे नहीं मालूम. दिनरात उसी के खयालों में रहने लगी. हर एक धड़कन जैसे उसी का नाम ले कर धड़कती. हर आतीजाती सांस मानो उसी की तलबगार थी.

"रफ्तारफ्ता मेरी इस हालत की खबर पूरे स्कूल में फैल गई. अब रमेश भी मुझे चाहने लगा था. हमारी चाहत इतनी बड़ी कि हम दोनों ने घर से भागने का फैसला कर लिया.

"किशोर उम्र का प्यार कितना हिम्मती और ताकतवर होता है, इस का अंदाजा कोई नहीं लगा सकता, खुद मुझे भी नहीं था. कुछ ही दिनों के बाद किसी लड़के के प्यार की खातिर मैं ने अपने मांबाप तक के प्यार को भी ठुकरा दिया था.

"घर से तो निकल गए मगर जाते कहां...? यों तो लगता था कि दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन घर से बाहर निकलो तो दुनिया बहुत छोटी मालूम पड़ती है. किधर जाएं? कहां ठहरें?

"इसी भटकाव में कुछ महीने गुजर गए. फिर हमारे पैसे खत्म हो गए. घर से लाए गए गहने भी बिक गए, खाने तक के लाले पड़ गए, मगर हमारा भटकना खत्म नहीं हुआ. कभी मेरे मातापिता और भाई का डर, कभी रमेश के मातापिता का डर... इन सब बातों के अलावा पुलिस का खौफ हमें कहीं भी चैन से नहीं रहने दे रहा था.

"बात यहीं तक रहती तो जिंदगी की दास्तान कुछ और होती, पर ऐसा नहीं हुआ. जिंदगी के इस भटकाव ने रमेश को कमजोर कर दिया. वह अपने पुराने रूप में आ गया. नशे की हालत में अपनी बेतरतीब जिंदगी की वजह मुझे बताने लगा. मेरे पैरों तले की जमीन सरक गई.

"मैं ने उसे प्यार से समझाने की कोशिश की, पर वह मानने को तैयार नहीं था. उसे अपने पिता की दौलत याद आने लगी.

"एक दिन की बात है. वह मेरी बरबादी और तबाही का दिन था. रमेश घर लौटा तो वह अकेला नहीं था, साथ में थे उस के पिता. मैं कुछ समझ पाती, इस से पहले रमेश के पिता ने कहा, 'मैं अपने बेटे को ले जा रहा हूं.'

"मैं तड़प उठी और कहा, 'यह क्या कह रहे हैं आप?'

"वे बोले, 'जो तुम ने सुना, वही कह रहा हूं.'

"मैं ने रमेश की तरफ देख कर कहा, 'ये आप के साथ नहीं जाएंगे.'

"पर, रमेश ने दोटूक कह दिया, 'तुम अपना देख लो, मैं अपने डैडी के साथ जा रहा हूं.'

"मैं कुछ समझ ही नहीं पाई कि यह सब क्या हो रहा है. मैं ने रमेश को झकझोरते हुए कहा, 'तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो? ऐसे कैसे जा सकते हो मुझे और मेरे पेट में पल रहे इस बच्चे को छोड़ कर?'

"रमेश कुछ कहता, इस से पहले उस के पिता ने कहा, 'समाज की नजरों में शादी ही नहीं हुई तो बच्चा कैसा...? और फिर तुम जैसी लड़कियों के लिए मैं अपने बेटे की जिंदगी बरबाद नहीं कर सकता.'

"मैं अवाक रह गई. रमेश के पिता की बातें मेरे कानों में गरम लावे की तरह बह रही थीं. मेरे होश उड़ गए थे.

"मैं कुछ कहती, इस से पहले रमेश दरवाजे के बाहर निकल चुका था. मेरी दुनिया लुट रही थी और मैं खड़ेखड़े देख रही थी. फिर पता नहीं कैसे मैं एकाएक दहाड़ें मारते हुए रमेश के पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ाने लगी, 'मुझे किस के सहारे छोड़ कर जा रहे हो? मत जाओ, मत जाओ न...'

"लेकिन, उस ने मेरे हाथों को इतनी जोर का झटका दिया कि मैं कुछ दूरी पर जा कर गिर पड़ी.

"मुझे होश आया तो मैं अस्पताल के बिस्तर पर थी और साथ में थीं मेरी मां, जो मेरा सिर सहला रही थीं. मैं उन की गोद में मुंह छिपा कर जोरजोर से रोने लगी.

"फिर मुझे अहसास हुआ कि 2 और हाथ मेरी पीठ को सहला रहे थे. मैं कितनी बड़ी बेवकूफ थी. मैं ने समझा कि रमेश लौट आया है. झट से पलट कर देखा तो वे 2 प्यारभरे हाथ मेरे पापा के थे.

"तब से अब तक मैं मम्मीपापा के साथ ही रहती हूं और साथ में है मेरा बेटा. जिस समय मेरा बेटा पैदा हुआ, मेरी उम्र 16 साल थी. आज मैं 21 साल की हो चुकी हूं. मातापिता के प्यार के साए में पता ही नहीं चला कि 5 साल कैसे गुजर गए.

"सच में सारी दुनिया दुश्मन हो जाए, पर मातापिता का प्यार कभी कम नहीं होता है. इन के प्यार को ठुकराने और विश्वास को तोड़ने की बेवकूफी कभी नहीं करनी चाहिए..."

5 साल पहले ही मोना मेरे दफ्तर में आई थी. आज की घटना एक बार फिर दहला गई. जीशान हमारे औफिस में हैड थे. औफिस के सारे अहम कामों का दारोमदार जीशान पर ही था. वे बरताव

के भी अच्छे थे. यही वजह थी कि जीशान औफिस में सब के चहेते थे. वे मुझ से कुछ ही साल बड़े थे, इसलिए मैं उन्हें 'भाई' कह कर बुलाया करती थी.

जीशान जरा आशिकमिजाज भी थे. भंवरा फूल से दूर कैसे रह सकता है? जीशान को मोना भाने लगी. फिर वही हुआ, जो अकसर होता है. मोना भी जीशान के करीब आने लगी. दोनों के दिलों में मुहब्बत की लहर सी आ गई. उस लहर में दोनों गोते लगाने लगे.

पिछले चंद सालों में ही उन का प्यार परवान चढ़ गया. सारे औफिस में उन की चर्चा होने लगी, मगर इन चर्चाओं से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ सकता था, क्योंकि दोनों दिलोजान से एकदूसरे को चाहते थे.

प्यार में धोखा खाई हुई एक बच्ची को दोबारा सच्चा प्यार मिल रहा था. दोनों एकदूसरे से बेपनाह मुहब्बत करने लगे. मगर एकाएक सुनने में आया कि जीशान ने शादी कर ली. मैं क्या मोना को हिम्मत देती, खुद ही इस खबर से परेशान थी.

किसी तरह हम ने दिन गुजारा. ड्यूटी खत्म कर जीशान के घर सचाई जानने के लिए निकलने ही वाली थी कि एकाएक शोर उठा कि 'जीशान आ गए, जीशान आ गए'.

मैं ने पलट कर देखा, तो जीशान मेरे सामने खड़े थे. मैं ने सवालों की झड़ी लगा दी. ढेरों सवालों के बीच एक ही तो सवाल था, "क्या आप ने शादी की?"

जीशान मेरे साथ वाली कुरसी पर बैठते हुए बोले, "हां."

"आप किसी और से शादी कैसे कर सकते हो..."

"मजबूरी थी, करनी पड़ी."

"ऐसी क्या मजबूरी थी कि एकाएक एक ही दिन में आप को शादी करनी पड़ी, वह भी किसी और से? ऐसा कभी होता है कि प्यार किसी से करो और शादी किसी और से? आखिर आप समझते क्या हैं अपनेआप को कि मर्द जो चाहे वह कर सकता है. कोई शादी कर के धोखा देगा और कोई प्यार कर के?

"लड़की क्या पत्थर की बेजान बुत है, जिस के साथ जैसा चाहे सुलूक कर लें. कितना प्यार करती है मोना आप से और आप भी तो प्यार करते थे न मोना से. वह प्यार था कि दिखावा था? बोलिए? लानत है ऐसे धोखेबाजों पर..."

गुस्से में न जाने और क्याक्या बोलती चली गई मैं. जीशान सिर झुकाए चुपचाप बैठे थे. आंसुओं की धार से उन की शर्ट भीगती जा रही थी, लेकिन मेरा बड़बड़ाना बंद नहीं हुआ.

मोना, जो मेरी बगल वाली सीट पर बैठी थी, उस ने मेरे कंधे को जोर से दबाते हुए इशारा किया कि मैं अब और ज्यादा न बोलूं.

मैं चुप हो गई. सारा स्टाफरूम सन्नाटे में था. ऐसा सन्नाटा मानो हम सब को निगल रहा हो. अब और बरदाश्त के बाहर था चुप रहना. चुप्पी तोड़ते हुए मैं ने ही कहा, "बोलिए जीशान भाई, कुछ तो बोलिए, आप की यह खामोशी हमारी जान ले लेगी."

जीशान धीरेधीरे कहने लगे. उन्हें एकएक लफ्ज कहने में मानो बड़ी मशक्कत करनी पड़ रही थी, "कल हम एक शादी में गए थे. सबकुछ ठीक चल रहा था कि ऐन निकाह से पहले दूल्हे के पास एक लड़की आई. कुछ डरीसहमी सी. कहने लगी कि दुलहन आप से कुछ कहना चाहती है.

"शोरशराबा एकाएक थम गया. सैकड़ों की भीड़ में भी ऐसी खामोशी कि सूई भी गिरे तो आवाज सब को सुनाई दे.

"दूल्हे के अब्बा ने कहा, 'ऐसी क्या बात है कि निकाह से पहले दुलहन कुछ कहना चाहती है?'

"दुलहन के अब्बा दौड़ते हुए अंदर गए. खलबली मच गई. हर एक की जबान पर एक ही बात अटक गई कि क्या बात हो सकती है.

"ऊहापोह की हालत में वहां हाजिर कुछ समझदार लोगों ने कहा कि चल कर सुन लेना चाहिए कि क्या कहना चाहती है लड़की.

"लड़की के कमरे तक जा कर समझदारों की टोली रुक गई. लड़के को अंदर भेजा गया.

"दुलहन घूंघट को जरा सरका कर सिर नीचे किए कहने लगी, 'निकाह से पहले मैं एक सचाई आप को बताना चाह रही हूं. मैं आप को धोखे में रख कर शादी नहीं कर सकती. मैं कभी मां नहीं बन सकती. टीनएज में ही किसी बीमारी की वजह से मेरा यूट्रेस निकाल दिया गया है. बस, यही कहना था.'

"लड़के के पिता ने दहाड़ लगाई, 'इतना बड़ा धोखा. एक बंजर लड़की से मेरे बेटे का रिश्ता होने जा रहा था...'

"दुलहन के पिता और कुछ सुन पाते, इस से पहले ही गश खा कर गिर पड़े.

"मैं ने कहा, 'मां ही तो नहीं बन सकती. बीवी, बहू जैसे सारे रिश्ते तो निभा सकती है. मुहब्बत कर सकती है. सब से बड़ी बात कि इस ने धोखा नहीं दिया, निकाह से पहले ही सचाई बता दी. यह इस का ईमान है.'

"यह सुन कर दूल्हे के अब्बा चिल्लाए, 'इस के ईमान का क्या हम अचार डालें...'

"मैं ने कहा, 'इस तरह अधूरी शादी से बैरंग लौटेंगे तो आप लोगों की भी फजीहत होगी.'

"इतना सुन कर लड़के की मां चीखीं, 'सैकड़ों लड़कियां मिल जाएंगी मेरे बेटे के लिए.'

"मैं भी अड़ा रहा, 'क्या गारंटी है कि जो आप की बहू बनेगी, वह मां बनेगी ही?'

"इस के बाद लड़के की मां ने हद करते हुए कहा, 'अरे, मां नहीं बनी तो हम उसे भी छोड़ देंगे. दुनिया में लड़कियों का अकाल है क्या?'

"मैं ने उन्हें प्यार से समझाना चाहा, 'दुनिया में बहुत सी औरतें मां नहीं बन पाती हैं. इस का मतलब क्या यह है कि उन्हें जीने का हक नहीं?'

"इस पर दूल्हे के पिता ने सवाल दागा, 'तुम कौन हो जी? क्या तुम कर सकते हो ऐसी बंजर लड़की से शादी? बोलो, जवाब दो?'

"मैं कुछ कह पाता, इस से पहले मेरे अब्बा ने सामने आ कर ऊंची आवाज में कहा, 'हां, मेरा बेटा करेगा इस ईमानदार लड़की से निकाह.'"

इतना कह कर जीशान ने अपना झुका हुआ सिर उठा कर मेरी नजरों में नजरें डाल कर कहा, "बस इतना ही हुआ. न मुझे वहां सचाई बताने का मौका मिला और न ही अब खुद को बेगुनाह साबित करना चाहता हूं. मैं मोना का कुसूरवार हूं. आप सब मुझे जो सजा देना चाहें, मैं सिर झुकाता हूं."

बाकियों का तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैं एकटक जीशान को देखती रही, देखती रही. मेरा दिल समंदर की तरह उछाल मारने लगा. दिल में आया कि जीशान जैसे फरिश्ते को अपने गले से लगा लूं...

इसी बीच मोना खड़ी हो गई और अपनी आदत के मुताबिक जोरजोर से ताली बजा कर कहने लगी, "अरे, सारे मुंह लटकाए क्यों बैठे हैं... हमारे जीशान सर की शादी हुई है भई, पार्टी तो बनती है. इन की पार्टी मेरी तरफ से. मैं तो शादी का लड्डू खा चुकी हूं, दूसरों को भी तो मौका मिलना चाहिए." ●

दिल्ली प्रेस

क्या कोरोना वायरस के प्राकृतिक प्रकोप ने भक्ति की पोलपट्टी खोल दी है. आखिर क्यों मंदिर-मसजिदों की जगह आज अस्पतालों, डाक्टरों, वैंटिलेटरों और औक्सीजन सिलैंडरों के पीछे भाग रहे हैं?

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर आप के सुख व स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है. आप इन्हें किसी और पर नहीं टाल सकते. इन स्थितियों से निबटने के लिए आप को तथ्यों को समझना होगा.

दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं आप को हर सामाजिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक उलझन को सुलझाने में मदद करती हैं और वह भी मनोरंजक तरीके से तर्क, तथ्य और दिल को छूने वाले शब्दों में. आज ही से पढ़िए.

सरिता ₹50 गृहशोभा ₹50 मुक्ता ₹30 सरस सलिल ₹10 मनोहर कहानियां ₹50 सत्यकथा ₹40

[illegible] circulation@delhipress.in

डिजिटल एडिशन भी उपलब्ध

HEMODEX®

Family Tonic
HEMODEX
SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्बीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

GROWMED
STOMAQUAR
PROTECTIVE COATING ACTION
PROTECTIVE COATING ACTION

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

मजाक

मिलावटी खाओ

अशोक गौतम

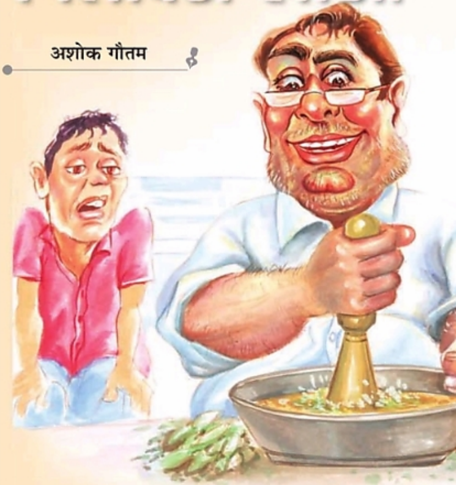

इधर अखबार में जब से आईसीएमआर की स्टडी की यह रिपोर्ट हिलोरें मार रही है कि कोवैक्सीन और कोविशील्ड को अगर एकसाथ मिला दिया जाए, तो इस का असर ज्यादा हो जाता है, तब से अपने शहर के नामीगिरामी मिलावट करने वालों की मूंछों की बिना तेल लगाए ही चमक देखने लायक है. भले ही वे कानून के साथ मिलबैठ कर मिलावट का धंधा करते रहे हों, पर जनता की नजरों से छिपे रहते थे.

कल वही मिलावटी लाल सरजी मूंछों पर ताव देते सीना चौड़ा कर मेरे सामने पहाड़ से तन कर खड़े हो गए और मेरा रास्ता रोक दिया. उन्होंने सारे बदन पर गजब का इत्र लगाया हुआ था. उन का पूरा बदन उस समय किस्मकिस्म के असलीनकली मिलावटी इत्रों से महक रहा था.

मिलावटी लाल सरजी बोले, "देखा बबुआ, मिक्सिंग का कमाल. तुम लोग नाहक ही हमें तीसरे दर्जे का व्यापारी समझते हो तो समझते रहो, पर आज तो आईसीएमआर की स्टडी ने भी मिक्सिंग पर अपनी मुहर लगा दी.

"बबुआ, जो सच है, वह सच है. जो सच था, वह सच था. जो सच है, वह सच ही रहेगा. उसे न तुम बदल सकते, न मैं, न कानून.

"कानून का डर दिखा कर झूठ को सच तो बनाया जा सकता है, पर सच को झूठ नहीं बनाया जा सकता. और सच यही है कि मिलावट के बिना जिंदगी जिंदगी नहीं, मिलावट के बिना इम्यूनिटी इम्यूनिटी नहीं.

"हम मानें या न मानें, पर सच तो यही है कि हम लोगों को बिना कौकटेल के कुछ भी पच नहीं सकता. शुद्ध खाने से हम सदियों से बीमार पड़ते रहे हैं. आज भी हम अपनी वही गलती दोहराने की वजह से बीमार पड़ रहे हैं और भविष्य में भी हम ने जो शुद्ध खाने की अपनी गलती नहीं सुधारी तो बीमार पड़ते रहेंगे.

"हमारी सारी इम्यूनिटी खत्म हो जाएगी, इसीलिए हमें न चाहते हुए भी जनहित में अपनी जान जोखिम में डाल आंखें मूंद जनता की जान बचाने के लिए, जनता की इम्यूनिटी का ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ाए रखने के लिए शुद्ध देशी गाय के घी में चरबी मिलानी पड़ती है, असली दूध में नकली दूध मिलाना पड़ता है, चावल में जनता के हित के लिए कंकड़ मिलाने पड़ते हैं, इंगलिश शराब में देशी दारू मिलानी

एंटीबौडीज बढ़ाओ

पड़ती है. दक्षिणपंथियों में वामपंथी मिलाने पड़ते हैं.

"किसलिए...? इसलिए कि देश की इम्यूनिटी बढ़े, सरकार की इम्यूनिटी बढ़े. हम यह सब इसलिए नहीं करते कि ऐसा करने से हमारा मुनाफा बढ़ता है, बल्कि यह तो हम देश की रोग गतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए करते हैं. और हमारी कोशिशों के नतीजे तुम्हारे सामने हैं.

"कोई हमें चाहे कितना ही देशद्रोही क्यों न कहे, पर हमारे लिए जनता की इम्यूनिटी पहले है, अपना मुनाफा बाद में. पर तुम घटिया सोच वाले हमेशा सोचते उलटा ही हो.

"देशभक्तों को आज देश की चिंता भले ही न हो, पर हमें अपने मुनाफे से ज्यादा जनता की इम्यूनिटी की चिंता है. और ऊपर से एक तुम हो कि रोज सुबह उठ कर सब से पहले मिलावटी दूध की चाय का स्वाद लगा चुसकियां लेते हुए हम मिक्सिंग करने वालों को ही कोसते हो.

"भाई साहब, जो हम दूध में पानी न मिलाते, मसालों में लीद न मिलाते, हलदी में पीला रंग न मिलाते, सच में झूठ न मिलाते, धर्म में लूट न मिलाते, आटे में फाइबर के नाम पर लकड़ी का बुरादा न मिलाते, राग मल्हार में राग गंवार न मिलाते तो बुरा मत मानना भाई साहब, देश केवल थाली बजाता, दिन में दीए जलाता, कोरोना से कतई भी लड़ नहीं पाता.

"यह तो हमारी उस मिक्सिंग का ही चमत्कार है, जिस की वजह से इस समय भी देश की इम्यूनिटी सातवें आसमान पर है.

"वैसे, गलती से लाख ढूंढ़ने के बाद भी एक तो हमें आज शुद्ध मिलता ही नहीं, पर गलती से जो हम धोखे से शुद्ध खा ही जाते तो इस समय स्वर्ग की हवा खाते होते, क्योंकि शुद्ध खाने वालों में एंटीबौडीज उतने नहीं होते, जितने मिक्सिंग किया खानेपीने वालों में होते हैं.

"यह बात हम बरसों से कह रहे थे, यह बात हम बरसों से जानते थे, पर कोई हमारी बात मानने को तैयार ही न था, घर का एमडी नीमहकीम जो ठहरा. अब आईसीएमआर कह रहा है तो मानना ही पड़ेगा.

"भाई साहब गए वे दिन, जब लापरवाही बढ़ती थी तो दुर्घटना के चांस बढ़ते थे. अब तो लापरवाही में ही सुरक्षा है." ●

प्यार

पता था मुझे प्यार का अंजाम
फिर भी मैं ने तुम से प्यार किया,
लोगों ने तुम पे उंगलियां उठाईं
पर मैं ने तुम पे एतबार किया.

हर आलिंगन पे लिखी रुबाई
तेरे अधरों का रसपान किया,
कभी जब लड़खड़ाए कदम मेरे
तेरी बांहों ने मुझे संभाल लिया.

चुपके से तेरे सपनों में आने की
गुस्ताखी मैं ने हर बार की,
रात चांदनी हो या अमावस की
इंतजार हर पल, हर रात किया.

– सेवा सदन प्रसाद

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

GROWMED®
AD VITAMIN
बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

अब चंदन एवं गुलाब के खुशबू में भी

GROWMED®
PAIN RELIEF Gel & Tablet
आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL
GROWMED®
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND VIGOUR OF BABIES
GROWMED PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini, Methyl Salicylate & Menthol Gel
15 gm

उड़ान

कुसुम गोस्वामी 'किम'

कई बड़ीबड़ी फिल्मी हस्तियां, रैंप पर वाक करती छरहरी मौडल, चारों ओर 'क्लिकक्लिक' की आवाज करते कैमरों की चमचमाहट...

जी हां, यह था इंडिया का मशहूर फैशन वीक... यहीं एक लोकप्रिय फिल्मी जोड़ा, एक बेहद ही खास लिबास में बड़ी नजाकत और अनोखे अंदाज के साथ शो स्टौपर बना, मेरी फ्रैंड श्रेया के वैडिंग कलैक्शन का.

एकाएक तालियों की गड़गड़ाहट कुछ ज्यादा ही तेज गूंज उठी... जब श्रेया अपने सैलिब्रिटी शो स्टौपर्स के साथ मंच पर आई.

मैं श्रेया को इस बुलंदी तक पहुंचते हुए पहली बार नहीं देख रही थी. देशविदेश में उस के फैशन शो होते ही रहते हैं. जब से उस के सपनों को पंख मिले हैं, वह आसमान में ऊपर और ऊपर उड़ती ही जा रही है.

आज मैं कानपुर से मुंबई एक सैमिनार अटैंड करने आई थी. वहीं श्रेया का शो भी देखने को मिल गया. भव्य समारोह खत्म हुआ और मैं श्रेया के साथ उस के घर के लिए रवाना हो ली.

मुंबई एक मायानगरी... यहां की चकाचौंध में अपनी ही चमक फीकी पड़ जाए और अगर आप में हौसला है, जुनून है, तो आप के लिए खुली हैं इस की बांहें... लेकिन यहां राहें बनाना आसान नहीं होता... यहां अपना एक मुकाम कायम कर के इस नामुमकिन काम को मुमकिन किया है श्रेया ने. आज उस के पास फेम भी है और नेम भी.

"अभी और कितनी उड़ान बाकी है? अब तो अंबर भी छू लिया तू ने?" मैं ने उस की कामयाबी की बड़े अनोखे अंदाज में तारीफ की.

"तू ने ही पंख लगाए थे एक रोज, अब तू ही पूछ रही है..." मेरे हाथों पर अपना हाथ रख कर श्रेया जोश में बोली.

मैं आत्मविश्वास से भरा उस का चेहरा देखती ही रह गई. अचानक मेरी यादों के घने बादलों के बीच से श्रेया का सालों पुराना उदास चेहरा झांकने लगा...

"देख आकांक्षा, तू जानती है न, मैं अभी शादी नहीं करना चाहती. कितना बुरा लगता है, जब लड़के वाले शादी से मना कर देते हैं. ये कौन होते हैं, हमें पसंद या नापसंद करने वाले?

"ऐसा नहीं है कि सारे लड़के जो मुझे देखने आए, मुझे पसंद थे. लेकिन नापसंद करने का हक तो लड़कों के पास ही है, इसलिए मैं खामोश रही. अगर लड़कियां भी इन्हें रिजैक्ट कर दें, इन की अक्ल भी ठिकाने लग जाए. हम भी पढ़लिख कर काबिल बन सकती हैं, अगर मौका मिले...' वह अपने अंदर का गुस्सा एक ही सांस में निकाल गई.

"पर, हम कर भी क्या सकते हैं, जब तक हमारे घर वाले हमारा साथ नहीं देंगे?" मैं ने उसे दिलासा देने की कोशिश की.

वह कुछ न बोल पाई... बस उस की नम आंखें बेबसी का दर्द बयां कर गईं.

मैं ने पूछा, "कब आ रहे हैं वे लोग?"

"होली के बाद... उन का लड़का किसी शहर में प्राइवेट जौब करता है. होली पर वह घर आएगा... उसी समय आएंगे वे लोग," श्रेया की लड़खड़ाती आवाज में दर्द छिपा था.

मैं जानती थी कि श्रेया को यह सब पसंद नहीं था. उस का सांवला रंग हमेशा शादी में बाधा बन जाता था, जबकि उस का ड्रैसिंग सैंस काफी अच्छा था. वह अपनी मां के साथ कपड़ों में कुछ न कुछ क्रिएटिव करती रहती थी.

दरअसल, श्रेया फैशन डिजाइनिंग का कोर्स करना चाहती थी, लेकिन हमारे छोटे से शहर में फैशन डिजाइनिंग का कोई संस्थान न होने की वजह से यह मुमकिन नहीं हुआ.

मुझे डाक्टर बनना था, इसलिए मैं ने 12वीं के बाद एक बड़े शहर में मैडिकल की कोचिंग जौइन की. वह भी मेरे साथ आना चाहती थी, पर उस के घर वाले राजी न थे. फिर उस ने हमारे शहर के ही डिगरी कालेज से आगे ग्रेजुएशन की पढ़ाई जारी रखी.

मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करती रही. फाइनली मेरा चयन एक नामचीन मैडिकल कालेज में हो गया.

मैं अभी सैकंड ईयर की स्टूडैंट थी और श्रेया ग्रेजुएशन पूरी करने वाली थी. उस ने कई बार बताया था कि उस के रिश्ते को ले कर उस की मां बहुत चिंतित रहती हैं.

श्रेया 3 बहनों में सब से बड़ी थी. उस की मां को बेटियों की शादी की बहुत फिक्र थी, इसीलिए वे चाहती थीं कि श्रेया की शादी जल्दी निबट जाए.

श्रेया का सांवला रंगरूप शादी में रुकावट बन रहा था, वहीं आंटी को छोटी बहनों का रंग उजला होने की वजह से उन की शादी में कोई खास रुकावट नजर नहीं आ रही थी.

होली पर मैं बड़ी खुश हो कर उस के घर गई... उस ने यह कह कर रंग खेलने से मना कर दिया कि मां ने रंगों से दूर रहने की हिदायत दी है.

खैर, होली के तीसरे दिन श्रेया का फोन आया, "वे लोग आज आने वाले हैं. मेरा दिल घबरा रहा है. क्या तू अभी आ सकती है?" वह बेहद परेशान लग रही थी.

मैं बिना समय गंवाए उस के घर पहुंच गई. मुझे देखते ही आंटी बोलीं, "तू ही इसे समझा. लड़की जात को यह सब सहना ही पड़ता है.

"और हां आकांक्षा, अपनी फ्रैंड को अच्छी तरह तैयार भी करा देना. मुझे रसोई में बहुत काम है. मैं जा रही हूं."

आंटी को लड़की की मां होने के नाते सांस लेने भर की भी फुरसत नहीं थी.

मैं ने श्रेया को संभाला. दोपहर तक लड़के वाले आ गए. मैं श्रेया के मिलने से पहले ही उन लोगों से मिल ली.

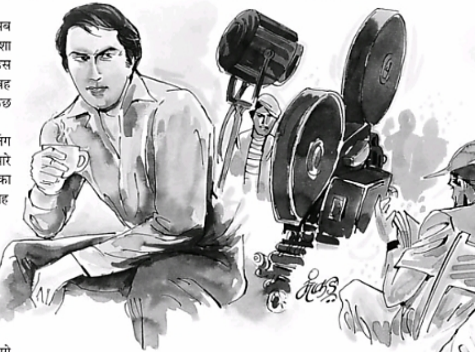

आंटी की आवभगत देख कर ऐसा लग रहा था, मानो कोई खास रिश्तेदार आया हो. मैं मन ही मन सोचती रही कि इतनी मेहमाननवाजी के बाद भी ये रिश्ता जुड़े यह जरूरी तो नहीं. सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा. फिर दूसरे लड़के वाले आएंगे, फिर आंटी आवभगत में जुट जाएंगी... बिना किसी दुख और दबाव के. हां, मन में तनाव चाहे जितना हो, पर लड़की वाले ऊपर से जाहिर नहीं कर सकते.

श्रेया सही थी, यह लड़का भी कुछ खास नहीं लगा. बस, शायद लड़का होने और नौकरी करने का रुतबा था, अकड़ थी. अगर श्रेया को मौका मिलता, इस से बेहतर करती.

खैर, इसी बीच श्रेया अपनी छोटी बहन के साथ आई. लड़के वालों ने तरहतरह के सवाल पूछे. मसलन, खाना बनाना आता है कि नहीं? सिलाईकढ़ाई जानती है कि नहीं? उस की रुचियां क्याक्या हैं? शायद उस के बारे में पूरा जान लेना चाहते थे. या यों भी कह सकते हैं कि इस तरह उसे ठोंकबजा कर देख रहे थे. आंटी श्रेया की क्रिएटिविटी बड़े चाव से दौड़दौड़ कर दिखा रही थीं, लेकिन शायद गलत जगह पर...

बहरहाल, शाम तक वे लोग विदा ले कर चले गए. जातेजाते कह गए कि 1-2 दिन में फोन करेंगे.

मेरी छुट्टियां खत्म होने वाली थीं. मैं जाने की तैयारी कर रही थी, तभी श्रेया का फोन आया, "आकांक्षा, घर आ सकती हो?"

"क्या हुआ, बताएगी? मुझे डर लग रहा है."

"डरने की बात नहीं है. तू आ जा."

मैं उस के घर पहुंची. वहां माहौल बड़ा ही तनाव से भरा लगा. आंटीअंकल परेशान दिख रहे थे. श्रेया ने बोलना शुरू किया, "लड़के वाले बहुत दहेज मांग रहे हैं, जो पापा के बस के बाहर है. अभी और 2 बहनों की शादी बाकी है. सिर्फ मेरी शादी में सबकुछ लगा देना, क्या तुझे सही लगता है आकांक्षा?"

मैं ने आंटीअंकल को समझाया, "अपनी सारी जमापूंजी श्रेया की शादी में लगा देना कोई बुद्धिमानी नहीं है. ऐसे लालची लोगों का क्या भरोसा?"

"पर बेटी, यह तो रीतिरिवाज है," सामाजिक कुरीतियों से अंदर तक जकड़े हुए अंकल बोले.

"रीतिरिवाज के नाम पर अपना सबकुछ लड़के वालों को सौंप देना, हमारी सब से बड़ी भूल है."

आंटीअंकल को मेरी बात थोड़ी समझ में आने लगी. मैं ने बात जारी रखी, "आप अपनी बेटियों को थोड़ी आजादी दें. साथ ही, इन के कैरियर पर भी जरूरत के मुताबिक पैसे लगाएं तो ये भी बहुत ऊंचाई तक पहुंच सकती हैं."

"हां, हम भी तो अपनी बेटियों का भला चाहते हैं," अंकल बोले.

"आज ये आप की बेटियां हैं, कल किसी की बहू, किसी की पत्नी बन जाएंगी. फिर इन के मामले में कितना बोल पाएंगे आप? जो कर सकते हैं, अभी करें... इन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाएं.

"आप लोग श्रेया को बड़े शहर भेज कर, कुछ बनने में उस की मदद क्यों नहीं करते? इतना टैलेंट होते हुए भी यह पूरी जिंदगी किसी पर निर्भर रहेगी. अगर यह काबिल होगी तो कोई काम कर के अपने घर की माली हालत को भी और मजबूत बना सकेगी."

मैं ने उन्हें चुप देख समाज में दीमक की तरह फैल रही एक कड़वी सचाई से रूबरू कराया, "आप लोग जानते हैं न. आजकल क्याक्या नहीं हो रहा? दहेज के लालच में कई लड़के शादी तो कर लेते हैं, पर इन का अफेयर बाहर ही चलता रहता है. कई बार तो शादी टूटने तक की नौबत आ जाती है. अगर ऐसे कोई भी हालात आएं, फिर यह कैसे जिएगी अपनी जिंदगी?

"आप ने इसे अपने पैरों पर खड़े होने का मौका ही नहीं दिया. अगर मेरे मांबाप यही सोचते, तो मैं भी डाक्टर बनने का सपना पूरा न कर पाती."

"लेकिन बेटी, बड़े शहर में अकेली लड़की के लिए डर भी ज्यादा रहता है," आंटी ने लड़की की मां होने के नाते दूसरी चिंता जाहिर की.

"डर तो हर जगह रहता है. क्या छोटा शहर, क्या बड़ा शहर? क्या शादी के पहले, क्या शादी के बाद? बस, इसे ही इतना समझदार बनाइए कि अपनी हिफाजत खुद कर सके.

"न जाने कितनी लड़कियां छोटे शहरों से आ कर बड़े शहरों में बने होस्टल में रह कर अपना सपना पूरा कर रही हैं."

आंटीअंकल और श्रेया की आंखें नम हो आईं. बहुत सोचविचार करने के बाद वे श्रेया को मेरे साथ भेजने के लिए तैयार हो गए. श्रेया को ले कर यह उन की ओर से किया गया अब तक का सब से सही फैसला था.

मैं ने एक गर्ल्स होस्टल में श्रेया के रहने का बंदोबस्त करा दिया. फिर उस ने फैशन इंस्टीट्यूट में सैलेक्शन के लिए कोचिंग लेनी शुरू कर दी. वह पार्टटाइम जौब भी करती रही, जिस से उस के मांबाप के ऊपर ज्यादा दबाव न बने.

आखिरकार श्रेया की कड़ी मेहनत के बल पर उस का एडमिशन एक नामी फैशन इंस्टीट्यूट में हो गया. उस ने फैशन डिजाइनिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिगरी हासिल की. अपनी क्रिएटिविटी के दम पर उस ने बहुत जल्द एक अलग पहचान बना ली.

कोर्स पूरा होते ही रिटेल सैक्टर की एक मल्टीनैशनल कंपनी में बतौर कौस्ट्यूम डिजाइनर उस की नौकरी लग गई. फिर उस ने पीछे मुड़ कर कभी नहीं देखा... अपनी दोनों बहनों को भी अच्छी तालीम दिलाने के बाद उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया. इधर मैडिकल की डिगरी पूरी करने के बाद मैं शहर के नामचीन नर्सिंगहोम में गाइनोकोलौजिस्ट बन गई. मैं ने अपने एक साथी डाक्टर से शादी की, जो कानपुर शहर में एक लैप्रोस्कोपिक सर्जन थे. आगे चल कर हम ने अपना एक फर्टिलिटी सैंटर खोला, जहां आज तक हम ने न जाने कितने पतिपत्नी की गोद भरी थी.

कुछ महीने पहले जब मैं अपने फर्टिलिटी सैंटर पर थी, एक जोड़ा आया. 'नमस्ते' के बाद जब वह आदमी बोलना शुरू हुआ, तो रुकने का नाम लेना ही भूल गया.

"आप का बहुत नाम सुना है मैडम. आप के पास बहुत आस ले कर आए हैं... शादी को बहुत साल गुजर चुके हैं. मांपिताजी बड़े निराश रहते हैं, अभी तक उन्हें दादादादी बनने का सुख नहीं दे पाया हूं.

"मैं उन की एकलौती औलाद हूं, ऊपर से अभी तक बेऔलाद हूं. मुझे ले कर तरहतरह की बातें होती हैं. छोटे शहर का रहने वाला हूं न इसलिए..." उस की नौनस्टौप बातें सुन कर गुस्सा आने की जगह मुझे थोड़ी हमदर्दी हुई. मैं ने एक सरसरी निगाह उस की पुरानी रिपोर्ट पर दौड़ाई, ऊपर नाम लिखा था 'राकेश सिंह'.

"कहां के रहने वाले हैं आप?"

"इटावा जिले का मैडम," वह मुंह लटका कर बोला.

"इटावा... राकेश सिंह... ?"

उस आदमी का चेहरा मुझे अब कुछ जानापहचाना सा लगा... अचानक मुझे श्रेया का मायूस चेहरा याद आया... उसे मायूस करने वाले इनसान का भी, जो सामने बैठे शख्स से मेल खा रहा था.

गौर से देखा तो यकीन हो चला, चेहरे पर उम्र से पहले ही झुर्रियां पड़ गई थीं. पर यह शख्स था वही लालची बंदा, जिस ने कभी श्रेया को पैसों के तराजू पर तोला था. आज कहां यह... और कहां श्रेया... लड़कियों को मौका मिले, तो सच में वे क्या नहीं कर सकतीं?

मैं ने उस की रिपोर्ट देखी, "आप का केस काफी पेचीदा है. कामयाब होने के कम ही चांस हैं, फिर भी पूरी कोशिश करूंगी," मैं ने एक डाक्टर की हैसियत से अपने मन के गुस्से को वहीं दफना कर कहा.

"ऐसा न कहें. आप के पास बड़ी उम्मीद ले कर आए हैं, जितने पैसे लगेंगे, हम लगाएंगे, बस हमें निराश न करें," आज भी पैसों की अकड़ बाकी थी उस में.

मैं ने कड़क लहजे में कहा, "पैसों से हर चीज नहीं खरीदी जा सकती... आप से कहा न, मैं कोशिश करूंगी."

वह हैरान हो कर मेरा चेहरा देखता रह गया.

"आप को कुछ टैस्ट कराने होंगे. उस के बाद ही आप का इलाज शुरू हो सकता है. मैं ने टैस्ट लिख दिए हैं. आप बाहर रिसैप्शन पर जा कर इन के बारे में पता कर सकते हैं."

मैं उसे जाते हुए देखती और सोचती रही कि पैसा ही सबकुछ नहीं होता, यह बात अभी तक इन नादानों को समझ नहीं आई. आज श्रेया के पास बेशुमार दौलत ही नहीं, बल्कि गजब का आत्मविश्वास और सुकून भी है.

बस यही तो है असली खुशियों का राज. सच में मेहनत और समझबूझ के बल पर इनसान अपना भविष्य सुनहरा बना सकता है. इसी सोचविचार के साथसाथ न जाने कब मेरे माथे पर तनाव की अनगिनत टेढ़ीमेढ़ी लकीरें बनतीबिगड़ती रहीं...

अचानक श्रेया की कार के हौर्न ने मुझे पिछले समय के गलियारे से निकाल कर वर्तमान में पहुंचा दिया.

श्रेया के पति का इंपोर्टऐक्सपोर्ट का बिजनैस है. आज मुंबई के साथसाथ कई बड़े शहरों में श्रेया के फैशन हाउस हैं.

वह फोन पर अपने पति से बात कर रही थी, "आप आ गए पैरिस से... ? मैं भी बस घर पहुंचने वाली हूं, अपनी सब से पक्की सहेली और मुझे राह दिखाने वाली आकांक्षा के साथ..."

मैं ने कनखियों से उस की ओर देखा, तो वह मुसकरा उठी. ●

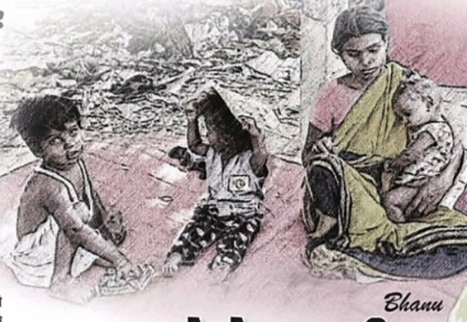

रुक कर देखे न कभी पैर के छाले

अब्दुल गफ्फार

31 मार्च, 2020. धूप इतनी तेज थी कि चमकती सड़क पर आंखें चुंधिया रही थीं. कोरोना की मार से पहले भूख की मार के डर से मजदूर अपनेअपने घरगांव लौटने के लिए बेचैन हो उठे. ट्रेन, बस समेत तमाम सवारियां बंद होने के चलते वे पैदल ही चल पड़े.

जुबैर, नाजिया और उन के तीनों बच्चे. रामभरोसे, उस की पत्नी कलावती, रामभरोसे का छोटा भाई कन्हैया और उन की 65 साल की बूढ़ी मां सरस्वती. कुलमिला कर 9 लोगों का जत्था दिल्ली से चंपारण के लिए पैदल चल रहा था.

सड़कों के चौड़ीकरण ने किनारे खड़े तमाम पेड़ों को निगल लिया था. हाईवे पर पसीना बहाते, गमछे और आंचल की छांव तले कदम से कदम मिलाते ये लोग चले जा रहे थे. मीलों चलने के बाद एक घना पेड़ नजर आया, जहां उन्हें आराम करने का मौका मिला.

दिल्ली से चंपारण की दूरी 1,000 किलोमीटर से ऊपर होगी, लेकिन मौत के सामने यह दूरी इन्हें कम लग रही थी.

लौकडाउन का ऐलान होते ही कारखाना बंद कर के मालिक ने जगह खाली करने का फरमान सुना दिया था. बीमारी की गंभीरता को देखते हुए सरकार ने दुकान, होटल, ट्रेन, बस, टैंपोरिकशा सब बंद कर दिया, ताकि कम्यूनिटी इंफैक्शन को रोका जा सके.

सफर का दूसरा दिन. सहारनपुर से इन का काफिला निकला. शाजेब और शहाब अपनी मां नाजिया की उंगली थामे चल रहे थे, जबकि सूफिया अपने अब्बू जुबैर के कंधे पर सवार थी. साथ में सामान से भरे 2 बैग भी जुबैर के कंधों से लटक रहे थे.

रामभरोसे के लिए सब से भारी बोझ उस की मां सरस्वती थी. एक तो बूढ़ी, ऊपर से बीमार. वह बेचारी भी हांफतेकांपते कदमों से चलने को मजबूर थी.

बहरहाल, सब ने अपनेअपने सामान पेड़ के नीचे रखे और बैठ कर सुस्ताने लगे. कलावती ने फटी हुई चादर बिछाई तो कन्हैया दौड़ कर चापाकल से पानी ले आया. शाजेब और शहाब कुछ खाने की जिद करने लगे.

नाजिया के पास बिसकुट के 2 पैकेट बचे थे, जो उस ने 5 रुपए के बदले 10-10 रुपए में खरीदे थे. 2 बिसकुट के पैकेट और 4 बच्चे... शाजेब, शहाब, सूफिया और कन्हैया. हालात के शिकार बच्चों ने उसी में मिलबांट कर खाया और बड़े लोगों ने सिर्फ पानी से प्यास बुझाई, फिर आगे चल दिए.

अचानक लौकडाउन होने के चलते सेठ ने 1000-1000 रुपए दे कर उन्हें टरका दिया था. दोनों परिवार एक ही गांव के थे. रामभरोसे के पास अब महज 680 रुपए और जुबैर के पास 820 रुपए बचे थे.

रास्ते में एक जगह मकई के भुट्टे खरीद कर सभी ने

यूनाईटेड®
प्रेशर कुकर
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...
60
यूनिराईज़
United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

पाईल-केयर्स 30ml
नियमित सेवन से दो दिनों में अच्छे परिणाम
बिना ऑपरेशन, खूनी एवं वादी बवासीर से आराम
PILE CARES
JHACTIONS HOMOEO PVT. LTD.
Ph.: 9973516445
www.jhactionshomoeo.com
सभी होमियोपैथी स्टोर्स पर उपलब्ध

गर्भपाल चूर्ण™
अग्रसेन™
मिलते जुलते नामों से सावधान नक्कालों से सावधान
हरविट™
स्ट्रॉंग पाउडर
गर्म (HEAT) पाउडर प्रजनन चूर्ण
जो पशु (मवेशी) पाल, गर्म (HEAT) प्रजनन लायक नहीं हो रहा हो, उसे देना अनिवार्य है।
एक ही खुराक काफी है।
बतीसा
पाचक, शक्ति बर्द्धक विटामिन युक्त एवं लिवर स्ट्रांग पाउडर
• खाया • पीया • पचाया
अग्रसेन आयुर्वेद भवन प्राइवेट लिमिटेड
व्यापारिक पूछताछ- मोबाइल नं 09279213720, Email : agrasenayurved@gmail.com, Website : www.agrasenayurved.com

पेट की आग को शांत किया और सफर जारी रखा. बच्चे और बूढ़े में दम ही कितना होता है, इसलिए हर 4-5 किलोमीटर पर उन्हें रुकना पड़ता, ठहरना पड़ता. जगहजगह पुलिस वालों के सवालों का जवाब देना पड़ता और कहींकहीं लाठियां भी खानी पड़तीं.

रात होने लगी. अनजान शहर में खोजतेखोजते मुश्किल से एक रैनबसेरा मिला, लेकिन पुलिस वालों ने वहां भी ठहरने से रोक दिया. मजबूरन वहां से आगे बढ़े और कुछ दूर चल कर सड़क के किनारे सो रहे मजदूरों की कतार में प्लास्टिक बिछा कर सो गए.

भूख से अंतड़ियां कुलबुला रही थीं, इसलिए नींद नहीं आ रही थी. पैर के छाले अलग ऊधम मचा रहे थे और गरम बिछौना बनी सड़क अलग मुंह चिढ़ा रही थी.

रात के 2 बज रहे होंगे कि रामभरोसे की पत्नी कलावती को शक हुआ कि उस की सास सरस्वती देवी की सांसें बंद हो चुकी हैं. उस ने 'अम्मांअम्मां' कह कर जगाना चाहा, पर वह तो नहीं जागी, लेकिन बाकी सभी लोग जाग गए.

सब के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. बुढ़िया मर चुकी थी और उन के लिए बहुत बड़ी समस्या छोड़ चुकी थी. वह कोरोना से मरी, थकान से मरी या बीमारी से मरी, इस से मतलब नहीं था, मतलब इस से था कि वह अपने साथ सब को ले कर मरी थी, इसलिए सब ने सरस्वती देवी की लाश को छोड़ कर चुपचाप निकल जाने में ही भलाई समझी.

सब तो जाने लगे, लेकिन 8 साल का कन्हैया अपनी मां को छोड़ कर जाने के लिए तैयार नहीं था. मां की लाश से लिपट कर वह जोरजोर से रो रहा था.

सब ने समझाया कि चिल्लाना बंद करो, वरना कोरोना के चक्कर में सब पकड़े जाएंगे. न सवारी है, न लाश ढोने का माद्दा, और न ही अंतिम संस्कार के लिए पैसे हैं. लाश का अंतिम संस्कार तो सरकार कर ही देगी, फिर मरने वाले के साथ इतने लोगों की जान मुश्किल में डालने का क्या मतलब.

फिर भी कन्हैया मानने के लिए तैयार नहीं था. बच्चा था, मासूम था, मां की याद उस के दिल में अभी भी बरकरार थी. दुनिया के पैंतरेबाजी से अनजान था, इसलिए मां को लाश मानने के लिए तैयार नहीं था.

रामभरोसे ने कहा, "रे कन्हैया, मां हम दोनों की थी, पर तू बात क्यों नहीं समझता है, अब इस को घसीट कर तो ले नहीं जा सकते."

कलावती ने कहा, "छोड़ दो इस को भी, यह अपनी माई के साथ यहीं सड़ता रहेगा."

रामभरोसे ने 'चटाक' से एक थप्पड़ कलावती के गाल पर जमाते हुए कहा, "बच्चा है... समझा रहा हूं... तुम्हारी मां थोड़ी है... उस की मां है तो रोएगा ही... तुम क्यों भचरभचर कर रही हो."

आखिरकार सब ने मिल कर कन्हैया को लाश से खींच कर अलग किया और उसे घसीटते हुए ले चले.

चौथे दिन लखनऊ पहुंचे. अब दोनों परिवारों के पास महज 300-300 रुपए बच रहे थे, जबकि सफर खासा लंबा था. पैर के छालों ने रुलाना छोड़ दिया और समझा दिया कि वे उन के हमसफर हैं, जो साथसाथ चलेंगे.

रात दर रात खुले आसमान में सोतेजागते जुबैर के दोनों बेटों को निमोनिया हो गया. नाजिया छाती पीटने लगी, 'हायहाय' करने लगी. न कोई मददगार, न डाक्टर, न दवा. बच्चे निमोनिया से जितना हांफते, नाजिया उतना ही तड़पती.

जैसेतैसे वे लोग एक सरकारी अस्पताल पहुंचे. कोरोना के डर से अस्पताल वालों ने मरीजों को दूसरे राज्य का बता कर इलाज करने से मना कर दिया.

अनजान जगह, सड़कों पर लोग नहीं, जेब में पैसे नहीं, हर तरफ मरघट जैसा सन्नाटा. भागतेभागते एक प्राइवेट क्लिनिक पहुंचे, जहां छिपछिपा कर इलाज चल रहा था.

डाक्टर ने 5,000 रुपए का खर्च बताया. उन लोगों के पास कुल जमा 600 रुपए बचे थे. डाक्टर ने इनकार कर दिया. सब एकदूसरे का मुंह ताकने लगे.

जुबैर ने कहा, "डाक्टर साहब हम पर रहम करें."

डाक्टर ने अपने कंपाउंडर से उन्हें बाहर निकालने का इशारा किया. लेकिन, बच्चों की मां अभी जिंदा थी. उस के कानों में सोने की बाली थी. नाजिया ने उन्हें उतार कर डाक्टर के सामने रख दी.

डाक्टर ने मन ही मन दोनों बाली को तोला और इलाज शुरू कर दिया.

इलाज से एक बच्चा बच गया, तो दूसरा नहीं रहा. नाजिया गम से निढाल हो गई. एक मां के लिए उस की औलाद से बढ़ कर कुछ नहीं होता. नाजिया कभी कोरोना को कोसती, तो कभी सरकार को, तो कभी अपनी गरीबी को.

बच्चे की लाश को रास्ते में दफना कर वे लोग फिर से आगे बढ़े. 9 में से 2 लोग साथ छोड़ चुके थे और बच गए थे 7 जने, जबकि मंजिल अभी काफी दूर थी.

छठे दिन वे सब गोंडा पहुंचे. अपनों से बिछड़ने का गम अलग, कोरोना की मार अलग और भूख से बेहाल अलग. मजलूम इनसान अपनी बेबसी से लड़े, कोरोना से लड़े या भूख से लड़े... पैर के छाले और मुंह के छाले आपस में होड़ करने लगे, एकदूसरे को चिढ़ाने लगे, इनसान की मजबूरी पर मुसकराने लगे.

रास्ते में एक जगह लंगर चल रहा था. यह देख कर सब के चेहरे खिल उठे. सुख हो या दुख, भूख तो अपनी जगह हर हाल में बरकरार रहती है.

सब ने पेट भर कर खाना खाया. जब पेट भरा, तब गम कुछ हलका हुआ, फिर एक टाइम का खाना भी साथ में बांध लिया और आराम करने की गरज से रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े.

जैसे ही गोंडा जंक्शन पहुंचे, आरपीएफ वाले लाठीडंडा ले कर आ धमके. काफी गुजारिश के बाद उन्हें रात गुजारने की मोहलत मिली. जब पेट भरा हो और ऊपर से जिस्म पर थकावट भी तारी हो तो नींद बहुत अच्छी आती है, इसलिए सब लोग घोड़े बेच कर सो गए.

अगली सुबह एक और मुसीबत सामने खड़ी थी. उन के सारे सामान चोरी हो चुके थे. बैग में रखे कपड़ेलत्ते, मोबाइल चार्जर, आईडी कार्ड, आधारकार्ड सबकुछ गायब.

"अब घर कैसे जाएंगे..." यह कलावती की फरियाद थी, जबकि नाजिया के आंसू तो कब के सूख चुके थे.

जुबैर और रामभरोसे को हर हाल में अपनी माटी को गले लगाना था. वे किस से अपना दुखड़ा रोते. बस किसी तरह वे लोग अपने गांव पहुंच जाना चाहते थे. अभी रास्ता आधा बचा था, जबकि जेब खाली हो चुकी थी.

फिर चलतेचलते सुबह से दोपहर और दोपहर से शाम हो गई. पैर नौनौ मन के हो गए, जो उठाए नहीं उठ रहे थे. होंठों पर भूख से पपड़ी पड़ चुकी थी. पेट धंस कर पीठ में समा चुके थे.

बसस्टैंड पर भीड़ देख कर वे लोग रुक गए. पास पहुंचे तो देखा कि कुछ लोग खाने के पैकेट बांट रहे हैं, शायद एनजीओ वाले थे. खाने के पैकेट देख कर सब के चेहरे खिल उठे. सभी लाइन में लग गए और अपनी बारी का इंतजार करने लगे.

अगला ठहराव गोरखपुर में था, जहां से चंपारण की दूरी महज 150 किलोमीटर थी. मांबाप के नाजों में पली नाजिया अब बेदम हो चुकी थी. उस के पैरों के छाले घाव बन कर तड़पा रहे थे. बुखार से उस का सारा बदन तप रहा था. उस के दोनों बच्चे अपनी अम्मी का मुंह ताक रहे थे, लेकिन अम्मी में इतनी भी ताकत नहीं बची थी कि वह अपने बच्चों को दुलार सके, पुचकार सके, उन के चेहरों पर हाथ फेर सके.

जुबैर अपनेआप को कोस रहा था और सारी मुसीबत की जड़ खुद को मान रहा था. एक बच्चा खो चुका था, अब बीवी भी हाथ से निकलती नजर आ रही थी.

मेहनतकश कलावती भी अब हार मान चुकी थी. उस से भी चला नहीं जा रहा था, फिर भी वह नाजिया के बच्चों की देखभाल कर रही थी.

दूर हाईवे के किनारे खड़ी एंबुलैंस को देख कर कुछ उम्मीद नजर आई. रामभरोसे लपक कर ड्राइवर के पास गया और बातें करने लगा. रामभरोसे ने इशारे से कन्हैया को बुलाया. जुबैर चुपचाप यह सबकुछ देख रहा था.

कन्हैया ने आ कर जुबैर को बताया, "ड्राइवर 7,000 रुपए में घर पहुंचाने को तैयार हुआ है. क्या कहते हो? पैसे घर चल कर देने हैं."

'घर पर कर्ज ले कर भाड़ा दे देंगे,' यह सोच कर जुबैर फौरन तैयार हो गया.

फिर एंबुलैंस का ड्राइवर सभी अधमरे इनसानों को लाद कर, मुसकराते, सीटी बजाते हुए चंपारण के लिए चल पड़ा. यह आज का उस का दूसरा भाड़ा था. ●

हिजड़ा

नीरज कुमार मिश्रा

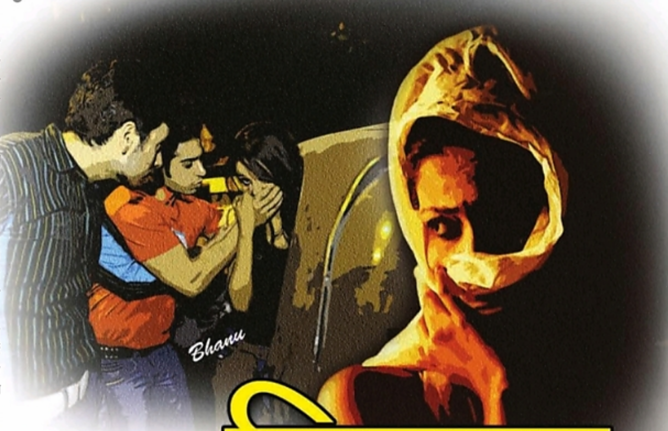

'छनाक' की आवाज के साथ आईना चकनाचूर हो गया था. आईने का हर टुकड़ा सिया का अक्स दिखा रहा था. मांग में भरा सिंदूर, गले का मंगलसूत्र, कानों के कुंडल ये सब मानो सिया को चिढ़ा रहे थे. शायद समाज के दोहरेपन के आगे वह हार मान चुकी थी. एकसाथ कई सवाल उस के मन में उमड़घुमड़ रहे थे.

आईने के नुकीले टुकड़ों में सिया को उस के सवालों का जवाब नहीं मिल सका. आंखों में आंसुओं के साथ पिछली यादें किसी फिल्म की तरह सिया की आंखों के सामने से गुजरने लगी थीं.

श्री नाम था उस का. 20 साल का होतेहोते वह और उस के मांबाप ये समझ चुके थे कि श्री का शरीर भले ही एक मर्द का हो, पर उस के अंदर का मन एक औरत का ही है.

मांबाप ने श्री को कई डाक्टरों को दिखाया, इलाज भी चला, पर कोई फायदा नहीं हुआ. डाक्टरों ने श्री को 'जैंडर आइडैंटिटी डिसऔर्डर' का मरीज बताया, जिस में शरीर तो औरत या मर्द का हो सकता है, पर हावभाव और लक्षण विपरीत लिंग के होते हैं.

श्री के नैननक्श तीखे थे. उस के चेहरे की खूबसूरती और चमक से लड़कियों को जलन होना लाजिमी था. वह लड़कियों के कपड़े पहनता, उन की तरह हावभाव रखता, गाने गाता और लड़कियों की तरह डांस करना उसे बहुत अच्छा लगता था. किसी से बात करते समय लचकनामचकना श्री की आदत थी.

श्री 22 साल का हो चुका था. बाहर जाने पर लड़कियों जैसे कपड़े पहनने लगा था वह... मानो अब उसे जमाने के कहनेसुनने की कोई परवाह नहीं थी. उस ने अमर नाम का एक दोस्त बनाया, जिसे वह अपना बौयफ्रैंड कहता था.

अमर को इस बात का अहसास था कि श्री की हरकतें लड़कियों जैसी हैं, पर उसे तो सिर्फ श्री के पैसे से मजे करने थे, इसलिए वह उस के नाज उठाता था.

आज वे दोनों श्री का जन्मदिन मनाने के लिए किसी रैस्टोरैंट में जाने वाले थे. इस खास दिन के लिए श्री ने अपने लंबे बालों को खुला छोड़ा हुआ था और वह सलवारसूट पहने था.

उन दोनों को वापसी में रात के साढ़े 11 बजे गए थे. अमर और श्री एकदूसरे का हाथ पकड़े गाड़ी की पार्किंग की तरफ बढ़ रहे थे.

"अरे लगता है, मैं अपना मोबाइल रैस्टोरैंट में ही भूल आया हूं," कह कर अमर अंदर की ओर लपक गया, जबकि श्री बाहर ही उस के आने का इंतजार करने लगा.

एक बड़ी सी गाड़ी श्री के ठीक सामने आ कर खड़ी हुई और उन में से बाहर निकले एक बलशाली लड़के ने श्री को अंदर घसीट लिया और उस के मुंह पर टेप लगा दिया, ताकि वह शोर न मचा सके. गाड़ी को वे लोग एक आधी बनी बिल्डिंग के पास ले गए और श्री को बाहर घसीटा.

"आज बहुत दिनों बाद कोई चिकना माल मिला है," श्री के कपड़े फाड़ते हुए एक वहशी बोला, पर अगले ही पल वह बुरी तरह चौंक गया, "अरे, यह तो लड़की के वेश में लड़का है. क्यों बे, लड़की बन कर घूमने में ज्यादा मजा आता है क्या?" कह कर उस वहशी ने श्री के गाल पर 2-4 घूंसे रसीद कर दिए थे.

"अब क्या करें, सारे मूड का तो सत्यानाश हो गया, अब मूड कैसे फ्रैश करें?" दूसरा लड़का बोला.

"भाई तुम लोग अपना सोच लो, मुझे तो आज इस लड़के के साथ ही मजे लेना है. कभीकभी स्वाद भी तो बदलना चाहिए न," इतना कह कर वह लड़का श्री के साथ जबरदस्ती करने लगा और फिर कुछ देर बाद बारीबारी से तीनों दोस्तों ने भी श्री के साथ मुंह काला किया और उसे तड़पती हालत में छोड़ कर वहां से चले गए.

बेहोशी की हालत में श्री कब तक रहा, उसे कुछ पता नहीं था. आंखें खुलीं, तो उस ने अपनेआप को एक अस्पताल में पाया. पुलिस वाले उस के सामने खड़े थे.

"तो आप का कहना है कि आप के बेटे का रेप हुआ है," पुलिस वाले ने श्री के पिता से पूछा.

"जी."

"हमें पीड़ित का बयान लेना होगा," इंस्पैक्टर ने कहा और श्री से कुछ अटपटे सवाल पूछने के बाद जल्द ही कार्यवाही करने की बात कह कर बाहर निकलते हुए पुलिस कांस्टेबल इंस्पैक्टर से कह रहा था, "साहब, ये सब अमीर घर के लड़कों के चोंचले हैं, पहले लड़की बन कर घूमते हैं और फिर रेप करवा कर हमारे लिए काम बढ़ा देते हैं. हिजड़े कहीं के."

दिल्ली प्रैस

धार्मिक त्यौहार औरतों पर दोहरा तीहरा बोझ हैं. कामकाजी औरतों को दफ्तर, पूजापाठ, तरहतरह के व्यंजन, सजनाधजना सब करना होता है तभी पूरे परिवार का त्यौहार बनता है.

क्या ऐसे त्यौहार औरतों के लिए सजा नहीं है जिन में पति व पुरुष हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें. यह सवाल उठाया जाना चाहिए या नहीं या इसे जीवन पद्धति समझ कर हर कोई ढोता रहे.

हर तरह की विषम परिस्थितियों, टेढ़े सवालों, कठिन फैसलों के लिए दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं अपनी अनूठी रचनाओं से तैयार करती हैं ताकि आप सुखी, संपन्न व बराबरी का जीवन जिएं. तर्क, तथ्य, मनोरंजन और निर्भिकता से भरी पत्रिकाएं पढ़ते रहिए ताकि जिंदगी खुशहाल रहे, सफल रहे.

सरिता गृहशोभा मुक्ता सरस सलिल चंपक मनोहर सत्यकथा

circulation@delhipress.in

डिजिटल एडीशन भी उपलब्ध

'हिजड़े...' श्री को यह शब्द गाली की तरह चुभा था. उस का कलेजा अंदर तक छलनी हो गया था.

यह पहला मौका था, जब उसे अपनी इस दोहरी जिंदगी जीने के ढंग पर शर्म आई थी.

तकरीबन 5 दिन तक अस्पताल में रहने के बाद श्री अपने मांबाप के साथ घर आया और अपने बौयफ्रैंड अमर को फोन लगाया.

काफी देर बाद अमर ने उस का फोन उठाया और सीधे शब्दों में कह दिया कि तुम्हारे साथ जो हादसा हुआ है, उस से हमारी काफी बदनामी हो गई है, इसलिए वह उस के साथ अब कोई संबंध नहीं रखना चाहता.

जिस दोस्त की अब उसे सब से ज्यादा जरूरत थी, उसी ने उस का साथ छोड़ दिया. श्री काफी परेशान हो उठा.

श्री ने अपने मर्दाना पर बेजान से पड़े हुए अंग को देखा और नफरत से भर गया. यह पहला मौका था, जब श्री ने अपना लिंग बदलवाने की बात गहराई से सोची, इस के लिए सब से पहले उस ने इंटरनैट खंगालना शुरू किया.

श्री के जैसे लक्षणों वाले और बहुत से लोग हैं इस दुनिया में. यह बात उसे पता चली, तो उस के मन को थोड़ा सुकून मिला और गहरे जाने पर उसे बहुत सी नई बातें पता चलीं. उस में से एक बात यह भी थी कि अब लिंग कोई बहुत बड़ी बात नहीं रह गई है और 10 लाख से भी कम खर्चे में भारत में ही रह कर अपना लिंग बदलवाया जा सकता है.

ये सारी बातें जान कर श्री ने अपने मांबाप से बात की, तो पहले तो वे सकते में आ गए, पर बाद में उन्होंने हामी भर दी.

कुछ और जरूरी खोजबीन के बाद डाक्टर मुकेश माथुर से अपना लिंग बदलवाने के लिए श्री गुजरात में उन से मिला और उन के अस्पताल में भरती हो गया.

डाक्टर मुकेश माथुर ने सब से पहले उसे हार्मोन के इंजैक्शन देने शुरू किए और थैरेपी व दूसरी दवाएं भी देनी शुरू कीं, जिन के असर से कभीकभी श्री परेशान हो उठता. कभी वह मूड स्विंग्स का शिकार भी हो जाता था. औरत के स्वभाव के साथसाथ उस का शरीर भी एक औरत का हो जाएगा, यह सोच कर श्री ये सारे दर्द झेलता रहा.

40 साल के डाक्टर मुकेश माथुर शहर के जानेमाने सर्जन थे और उन्होंने कई इनाम भी जीते थे. उन्हें मरीज की मनोदशा का अच्छी तरह से पता था. वह घंटों श्री का हाथ पकड़ कर उस के सिरहाने बैठे रहते और उसे हिम्मत बंधाते. श्री को उन का यह अपनापन बहुत अच्छा लगता था.

धीरेधीरे दवाएं और हार्मोन का असर श्री के शरीर पर आने लगा. सीने पर उभार आने लगे और शरीर के बाल पतले हो कर गायब होने लगे.

आखिर वह दिन भी आया, जब डाक्टर मुकेश माथुर ने श्री को औरत घोषित कर दिया.

डाक्टर माथुर ने श्री को नया नाम भी दिया, "नए शरीर के साथ तुम्हारा नया नाम होगा सिया."

श्री अपने नए नाम सिया को बारबार दोहरा रहा था और ऐसा करते समय उस की आंखों से आंसू लगातार बहे जा रहे थे.

श्री से सिया बन कर उस के जीने का अंदाज ही बदल गया था. सिया अपनेआप को घंटों आईने के सामने निहारती रहती थी.

उस ने सिया के नाम से नया फेसबुक एकाउंट भी बना लिया था. सब से पहली फ्रैंड रिक्वेस्ट उस ने अमर को भेजी. एक खूबसूरत लड़की का फोटो देख कर अमर ने तुरंत ही फ्रैंडशिप स्वीकार कर ली. धीरेधीरे फोन नंबरों का आपस में बदलना हुआ और अमर और सिया में बातचीत होने लगी.

सिया ने वीडियो काल कर अमर को अपनी खूबसूरती की एक झलक भी दिखला दी थी.

अमर सिया से मिलने के लिए बेचैन हो उठा और एक रैस्टोरैंट में बुलाया, फिर उसे बहाने से एक होटल के कमरे में ले गया. उस की मंशा सिया जैसी खूबसूरत लड़की को भोगने की थी, इसलिए वह सिया को बातों मे लगा कर उस के कपड़े उतारने लगा. सिया ने भी कोई विरोध नहीं किया. कुछ देर बाद सिया बिना कपड़ों के अमर के सामने खड़ी थी.

अमर अपलक सिया को निहारे जा रहा था. उसे अपनी बांहों में भर लिया था, पर जैसे ही सिया के शरीर में अमर ने समाने की कोशिश की, सिया ने उसे जोर का धक्का दिया.

यह देख अमर थोड़ा सा चौंक उठा,

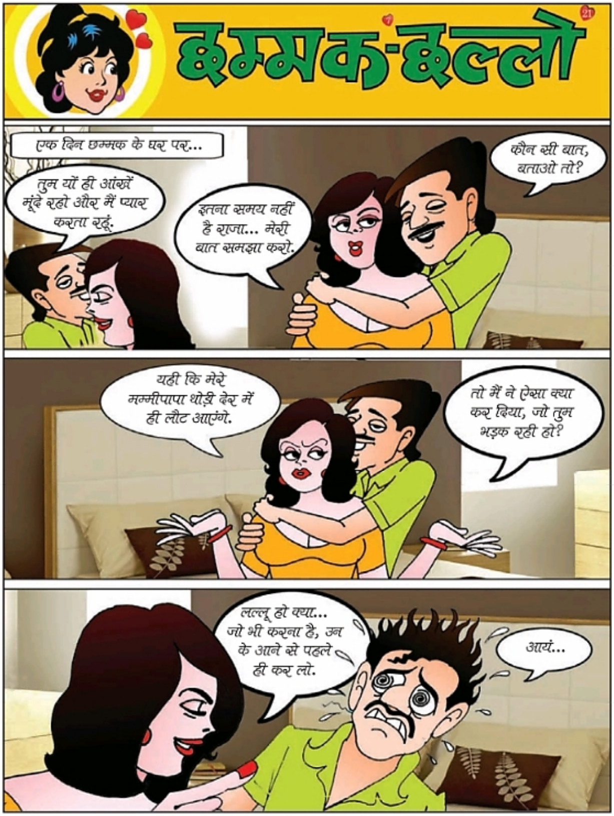
छम्मक छल्लो
एक दिन छम्मक के घर पर...
तुम यों ही आंखें मूंदे रहो और मैं प्यार करता रहूं.
इतना समय नहीं है राजा... मेरी बात समझा करो.
कौन सी बात, बताओ तो?
यही कि मेरे मम्मीपापा थोड़ी देर में ही लौट आएंगे.
तो मैं ने ऐसा क्या कर दिया, जो तुम भड़क रही हो?
लल्लू हो क्या... जो भी करना है, उन के आने से पहले ही कर लो.
आयं...

"अरे सिया, अब इतना नाटक क्यों कर रही हो?"

"मैं नाटक नहीं कर रही, बल्कि मैं तुम्हें यह अहसास कराना चाहती हूं कि तुम ने क्या खोया है. यह सिया वही श्री है, जिस को तुम ने एक दिन अपनी बदनामी के डर से ठुकरा दिया था," ऐसा कह कर सिया ने झट से कपड़े पहने और कमरे से बाहर निकल गई.

अमर को अपने ऊपर भरोसा नहीं हो रहा था कि यह सब हकीकत थी या कोई छलावा था.

सिया अपने मांबाप के साथ रहने लगी. महल्ले के लोगों को पता चल चुका था कि श्री ही सिया है, इसलिए सब उसे अजीब नजरों से देखते थे. कभीकभी 15-16 साल के लड़के पीठ पीछे उसे 'हिजड़ा' बोल कर हंसते हुए चले जाते थे.

पहलेपहल तो सिया ने ध्यान नहीं दिया, पर जब इन चीजों की हद होने लगी, तो सिया के मन में खटास आने लगी.

"मैं कोई हिजड़ा नहीं, बल्कि पूरी औरत हूं," सिया फुसफुसा उठती थी.

इस दौरान सिया को हार्मोन थैरेपी के लिए डाक्टर मुकेश माथुर के पास जाना पड़ता था. उस दिन 14 फरवरी यानी 'वैलेंटाइन डे' था. डाक्टर मुकेश माथुर ने हाथों में एक सुर्ख गुलाब ले कर सिया को दिया.

"क्या आप किसी लड़की को लाल गुलाब देने का मतलब जानते हैं डाक्टर?" सिया ने पूछा.

"अच्छी तरह जानता हूं, तभी तो दे रहा हूं," डाक्टर मुकेश माथुर ने कहा, "तुम्हारी सर्जरी करने के बाद मुझे तुम से मिलतेमिलते इतना प्यार हो गया है कि अब तुम्हारे बिना मुझ से रहा नहीं जाता है, इसलिए मैं तुम से शादी करना चाहता हूं."

एक ट्रांसजैंडर बनने के बाद से ही सिया एक ऐसे इनसान को ढूंढ़ रही थी, जो उस के साथ शादी करने की हिम्मत जुटा सके और उसे औरत के जिस्म का अहसास करा सके.

सिया डाक्टर मुकेश माथुर की ये बातें सुन कर फूली नहीं समा रही थी. उसे लग रहा था कि उस का सपना पूरा हो गया है.

सिया के मांबाप को भला इस फैसले से क्या एतराज होता... उन्होंने उस की हां में हां मिला दी.

एक सादा समारोह में डाक्टर मुकेश माथुर ने सिया से शादी कर ली. एक ट्रांसजैंडर की एक डाक्टर से शादी को लोकल अखबारों ने प्रमुखता से जगह दी. सोशल मीडिया पर भी डाक्टर मुकेश माथुर और सिया की शादी खूब सुर्खियों में रही.

शादी के बाद डाक्टर मुकेश और सिया जी भर कर सैक्स का सुख लेने लगे. अपने शरीर को ले कर सिया का हर तरह का डर खत्म हो गया था.

आज कुछ मीडिया वाले डाक्टर मुकेश माथुर का इंटरव्यू लेने आए थे, जो उन से बारबार वही जानना चाह रहे थे कि एक ट्रांसजैंडर के साथ शादी कर के उन्हें कैसा लग रहा है. पत्रकार घुमाफिरा कर उन के सैक्स संबंधों के बारे में ही सवाल पूछ रहे थे. उन के हर सवाल का डाक्टर मुकेश माथुर बड़ी गर्मजोशी से जवाब दे रहे थे.

पत्रकारवार्त्ता खत्म होने के बाद डाक्टर मुकेश माथुर के मोबाइल पर एक फोन आया, जिसे सुन कर वे बहुत खुश हुए और सिया से बोले, "सुनो सिया, मैं ने एक लिंग बदले हुए एक लड़के से शादी की है. मेरे इस हिम्मती फैसले के लिए मुझे मानव कल्याण संस्था वाले एक अवार्ड दे रहे हैं," डाक्टर मुकेश चहक रहे थे. उन को खुश देख कर सिया भी खुश हो गई.

2 दिन बाद ही डाक्टर मुकेश माथुर को जब अवार्ड मिल गया, तो उस ने अपने कुछ डाक्टर साथियों को इस खुशी में घर पर पार्टी के लिए बुलाया. सारा खाना बाहर से मंगवाया गया था और महंगी वाली शराब का दौर चल रहा था. मुकेश के सभी साथी नशे में झूमने लगे थे.

"यार मुकेश, शराब तो तू ने पिला दी, पर शबाब के लिए अपनी उस ट्रांसजैंडर बीवी को ही बुला ले," एक साथी ने कहा.

"हां यार, बड़ा मूड हो रहा है," दूसरे साथी ने कहा.

"नहीं यार, भले ही वह ट्रांसजैंडर हो, पर है तो उस की बीवी ही," दूसरे दोस्त ने बचाव किया.

"इन ट्रांसजैंडर की भी क्या इज्जत और क्या बेइज्जती? ये तो ग्रुप सैक्स के लिए भी राजी हो जाते हैं."

कमाल की बात यह थी कि डाक्टर मुकेश माथुर उन सब की बातों का कोई विरोध नहीं कर रहे थे, बल्कि उन की हां में हां मिला रहे थे.

दीवार के पीछे खड़ी सिया यह सब सुन रही थी. उस की आंखों से आंसू बह रहे थे. इतने में सिया ने अपनी पीठ पर किसी का मजबूत हाथ महसूस किया. ये डाक्टर मुकेश माथुर थे.

मुकेश सिया को घसीटते हुए अपने साथियों के सामने ले गए और बोले, "लो दोस्तो, शराब के बाद शबाब... मजे ले लो इस के."

"यह आप क्या कर रहे हैं, मैं आप की पत्नी हूं."

डाक्टर मुकेश माथुर बड़ी जोर से हंस पड़े, "अरे ओ... मैं ने तुझ जैसे हिजड़े सौरी, ट्रांसजैंडर से शादी इसलिए की है कि मुझे समाज में सम्मान मिल सके, अवार्ड मिल सके... और मैं एक हिजड़े का उद्धार करने वाले डाक्टर के रूप मे जाना जाऊं," नशे में डाक्टर मुकेश माथुर बुरी तरह हावी हो रहे थे, जबकि डाक्टर मुकेश के साथी सिया के कपड़े खींचने में लगे हुए थे.

कुछ ही देर में सिया उन सब के सामने नंगी खड़ी हुई फफक रही थी. वह हाथों से अपने सीने को ढकने की नाकाम कोशिश कर रही थी कि एक आदमी ने उसे बिस्तर पर गिरा लिया.

उस के बाद सभी लोगों ने बारीबारी से सिया के साथ मुंह काला किया और इस घटना का वीडियो भी बनाया, ताकि इस रेप की यादें ताजा रहें.

अगली सुबह जब सिया को होश आया, तब कमरे में कोई नहीं था, सिर्फ शराब और सिगरेट की बदबू थी.

सिया ने किसी तरह से कपड़े पहने और उस की नजर आईने के टूटे हुए टुकड़ों पर पड़ी, जो उसे चिढ़ा रहे थे मानो कह रहे हों कि तू एक हिजड़ा है, तू एक ट्रांसजैंडर है और तुझे समाज वाले इज्जत की नजर से कभी नहीं देखेंगे, बड़ी चली थी शादी करने...

सिया ने भरे मन से टूटे आईने का एक टुकड़ा उठाया और अपनी कलाई की नस को काट लिया. उस की कलाई से खून तेजी से टपकने लगा था. सिया के कानों में अब भी आवाजें गूंज रही थीं... 'ट्रांसजैंडर, हिजड़ा... हिजड़ा...' ●

दिल्ली प्रैस

गृहशोभा

सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट

स्वतंत्र चट्टान से
विश्वास का आईना बनाए,
तैयार करे हर कल के लिए.

पाक्षिक पत्रिका

संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

राशि खन्ना की हिंदी फिल्मों में वापसी

तमिल व तेलुगु फिल्मों की मशहूर गायिका व अदाकारा राशि खन्ना ने सब से पहले साल 2013 में हीरो जौन अब्राहम के साथ हिंदी फिल्म 'मद्रास कैफे' में ऐक्टिंग कर बौलीवुड में कदम रखा था. इस फिल्म में उन्होंने रा के अफसर (जौन अब्राहम) की पत्नी रूबी सिंह का किरदार निभाया था.

इस के बाद राशि खन्ना ने तेलुगु फिल्म 'उहालु गुसागुसालदे' से तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा था. इस फिल्म में उन की अदाकारी की काफी तारीफ हुई थी. फिर उन्हें तेलुगु फिल्म 'जोरू' में ऐक्टिंग करने के साथ ही गाने का भी मौका मिला था, जबकि साल 2017 में फिल्म 'विलेन' से उन्होंने मलयालम सिनेमा में कदम रखा था.

महज 7 साल के कैरियर में राशि खन्ना ने तमिल, तेलुगु व मलयालम भाषाओं की 20 फिल्में की हैं. इन दिनों वे दक्षिण भारतीय सिनेमा में 'तुगलक दरबार', 'मनम', 'पक्का कमर्शियल', थैंक यू', 'सरदार', 'मेथावी', 'शैतान का बच्चा' जैसी फिल्में की हैं.

अब पूरे 8 साल बाद राशि खन्ना ने हिंदी इंडस्ट्री में दोबारा वापसी की है. इन दिनों वे अजय देवगन के साथ राजीव मापुस्कर के डायरैक्शन में वैब सीरीज 'रुद्र' की शूटिंग कर रही हैं.

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में वापसी की चर्चा चलने पर राशि खन्ना कहती हैं, "हकीकत में कालेज के दिनों में मैं आईएएस अफसर बनने का सपना देख रही थी. मैं ने कभी मौडल या हीरोइन बनने की बात सपने में भी नहीं सोची थी.

"मुझे पहली हिंदी फिल्म 'मद्रास कैफे' में जौन अब्राहम के साथ काम करने का मौका मिला था. इस फिल्म में मेरी ऐक्टिंग की तारीफ के चलते मुझे तेलुगु, तमिल व मलयालम फिल्मों में दमदार और चुनौती से भरे किरदार निभाने के मौके मिलते गए. मैं ने दक्षिण भारतीय फिल्मों में ऐक्टिंग करने के साथ गीत भी गाए, जबकि मुझे हिंदी फिल्मों में महज नाचगाने वाले किरदार ही मिल रहे थे, इसलिए मैं उन्हें नहीं कर रही थी.

"मगर अब जब मुझे वैब सीरीज 'रुद्र' में चुनौती से भरा किरदार निभाने का मौका मिला, तो मैं ने तुरंत इसे स्वीकार कर लिया. अपने कैरियर में आज मैं जहां हूं, वहां पहुंचने के लिए मैं ने बहुत मेहनत की है. इस के चलते उत्तर और दक्षिण मनोरंजन उद्योग में मुझे दिलचस्प अवसर मिले हैं.

"हर 3-4 दिन में अलगअलग शहरों में सफर करना आसान नहीं है, पर मुझे इस बात की बिलकुल भी शिकायत नहीं है, क्योंकि मैं होनहार लोगों के साथ काम करना चाहती हूं. इस से मेरे अंदर कला के प्रति जुनून बरकरार रहता है."

- शांति स्वरूप त्रिपाठी ●

फिल्म 'जान लेबू का' का फर्स्ट लुक हुआ वायरल

भोजपुरी भाषा की अस्मिता की लड़ाई लड़ते हुए 'बिग बौस ओटीटी' पर हंगामा बरपा रही भोजपुरी अदाकारा अक्षरा सिंह की पांचों उंगलियां घी में हैं. उन्होंने कोरोना काल की आपदा को अवसर बनाते हुए तकरीबन हर हफ्ते नया संगीत वीडियो 'यूट्यूब' चैनल पर पोस्ट करते हुए जम कर शोहरत बटोरी, तो वहीं कोरोना से थोड़ी राहत मिलने पर अपनी भोजपुरी फिल्मों की शूटिंग भी पूरी की.

इसी वजह से अक्षरा सिंह की भोजपुरी हीरो दिनेशलाल यादव 'निरहुआ' के साथ वाली भोजपुरी फिल्म 'जान लेबू का' का फर्स्ट लुक बाहर आते ही वायरल हो गया.

फिल्म 'जान लेबू का' की खासीयत यह है कि काफी लंबे समय बाद दिनेशलाल यादव 'निरहुआ' और अक्षरा सिंह बड़े परदे पर नजर आने वाले हैं.

First Look
DR. S.K. SHRIVASTAVA'S
जान लेबू का
Directed by
DINKAR KAPOOR (K.D.)
Produced by
SHREY SHRIVASTAV
Music OM JHA
SHREY SHRIVASTAV
MANGESH KEDAR & PRAVESH KUMAR

मजेदार बात यह है कि अक्षरा सिंह इन दिनों करन जौहर के संचालन में प्रसारित हो रहे 'बिग बौस ओटीटी' पर नजर आ रही हैं, जबकि दिनेशलाल यादव 'निरहुआ' भी सलमान खान के संचालन में 'बिग बौस' का हिस्सा रह चुके हैं और अब ये दोनों कलाकार फिल्म 'जान लेबू का' में एकसाथ दिखाई देंगे.

फिल्म 'जान लेबू का' के डायरैक्टर दिनकर कपूर कहते हैं, "हमारी यह फिल्म एक प्रेम कहानी पर आधारित है, जिसे हम ने एकदम साफसुथरे तरीके से और नए ट्रैंड के हिसाब से बनाया है. हमारी फिल्म हर वर्ग के दर्शकों को पसंद आने वाली है. इस फिल्म के गाने तो अभी से लोग पसंद कर रहे हैं."

फिल्म 'जान लेबू का' में दिनेशलाल यादव 'निरहुआ' और अक्षरा सिंह के साथ जोया खान, महिमा गुप्ता, मनोज टाइगर, दीपक भाटिया, नीलिमा पांडेय, इशा, जफर खान, शंकर मिश्रा और अरविंद वाहे की अहम भूमिकाएं हैं.

ग्लैमरस ईशा छाबड़ा का जलवा

'मस्तराम' सीरीज की हीरोइन ईशा छाबड़ा कई फिल्मों और शो का हिस्सा रही हैं और उन्होंने दर्शकों से अपार प्यार पाया है. अपने कैरियर की कामयाबी की लिस्ट में एक और शानदार कड़ी जोड़ते हुए ईशा छाबड़ा दुनिया में सब से बड़े फिल्म फैस्टिवलों में से एक 'स्टैंडअलोन फिल्म फैस्टिवल' में डांस करती नजर आएंगी.

इस बारे में ईशा छाबड़ा कहती हैं, "मुझे लगता है कि यह मेरे लिए एक अच्छा मौका है कि मुझे फैस्टिवल में न्योता दिया गया है. उम्मीद है कि मैं गाने और अपने डांस के साथ इंसाफ कर पाऊंगी."

ईशा छाबड़ा हाल ही में एमटीवी के 'फौरबिडन एंजैल्स' का हिस्सा थीं और इस समय एक हौलीवुड फिल्म के लिए काम कर रही हैं, जिस के लिए उन्होंने पहले ही शूटिंग शुरू कर दी है.

सुनिए गाना 'न होना तुम से दूर'

समर प्रोडक्शंस ने अपने पहले गाने 'न होना तुम से दूर' के साथ म्यूजिक की दुनिया में अपना कदम रख दिया है. इस गाने को इंडी पौप सिंगर गजेंद्र वर्मा ने गाया है.

प्रोड्यूसर प्रांजल खेवलकर और समर प्रोडक्शंस ने अपने पहले गाने 'न होना तुम से दूर' के लौंच के लिए एक ग्रैंड पार्टी आयोजित की. गाने का पोस्टर रिलीज हो जाने के बाद से इस के चर्चे हर जगह हो रहे हैं. गजेंद्र वर्मा की बेहतरीन आवाज, गाने में मन्नारा चोपड़ा का होना और अमन प्रजापत के डायरैक्शन की वजह से इस गाने को काफी अटैंशन मिल रही है.

गाना 'न होना तुम से दूर' गजेंद्र वर्मा के यूट्यूब चैनल पर रिलीज हो चुका है और गाने को प्रांजल खेवलकर ने वर्चुअल प्लैनेट म्यूजिक के साथ कोलैबोरेशन करते हुए इस को समर प्रोडक्शंस के तहत प्रोड्यूस किया है. ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां काले घेरे छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निख़ारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for
Strong Immunity
ZEE
ZEE DRUGS

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) September-I
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 01 to 07, Published on 15/8/2021 Pgs.32

PARLE
20-20™
TASTE KA RICHNESS
TOTAL AWESOMENESS
PARLE
20-20™
CASHEW COOKIES
New Improved
PARLE
20-20™
BUTTER COOKIES
New Improved
BISCUITS